प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा
(डी.एल.एड.)

पाठ्यक्रम-503

प्रारम्भिक कक्षाओं में भाषा सीखना/सीखाना

ब्लॉक-1
भाषा की समझ

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

A 24/25, सांस्थानिक क्षेत्र, सैक्टर-62 नौएडा,

गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201309

वैबसाइट : www.nios.ac.in

श्रेय अंक (4=3+1)

खण्ड	इकाई	इकाई का नाम	सैद्धान्तिक अध्ययन अवधि (घंटों में)		प्रयोगात्मक अध्ययन
			विषय-वस्तु	क्रियाकलाप	
खण्ड-1 भाषा की समझ	इकाई 1	भाषा क्या है?	4	2	भारत की संरचना एवं बच्चों के वाक्यों एवं बहुवचनों का विश्लेषण
	इकाई 2	भारतीय भाषाएँ	4	2	त्रिभाषा सूत्र को लागू करना
	इकाई 3	भाषा-अधिगम एवं भाषा-शिक्षण	4	3	• संचयी संरचना उपागम, अनुवाद एवं व्याकरण पर समूह कार्य • विभिन्न वर्गों से तीन पाठ्य वस्तुओं का विश्लेषण • भाषा शिक्षण का उपयोग साहित्यिक गतिविधियों की सार्थकता
खण्ड-2 भाषा अधिगम संबंधित कौशल	इकाई 4	सुनना व बोलना	5	3	• विभिन्न तकनीकों, सहायकों का उपयोग • कक्षा में श्रुतलेख का उपयोग
	इकाई 5	पढ़ना	5	3	शिक्षण-अधिगम शब्दकोश निर्माण में विभिन्न पठन उपागमों का उपयोग
	इकाई 6	लिखना	5	3	• डिस्लैक्सिया के संर्कतक के रूप में हस्तलिपि का अध्ययन • लेखन कौशल शिक्षण के लिए विभिन्न प्रविधियों का उपयोग
खण्ड-3 भाषा सीखना	इकाई 7	साहित्य एवं भाषा	5	2	इकाई योजनाओं का विकास
	इकाई 8	भाषा की कक्षा में शिक्षण योजना	6	4	विभिन्न उपागमों में पाठ योजना प्रत्यय चित्रण की तैयारी
	इकाई 9	शैक्षिक सामग्री: कुछ नये आयाम	5	4	विभिन्न श्रव्य-दृश्य सामग्री का निर्माण
	इकाई 10	मूल्यांकन और आकलन	4	2	भाषा आकलन उपकरण
		शिक्षण	15		
		योग	62	28	30
		कुल योग = 62+ 28+ 30 = 120 घण्टे			

ब्लॉक-1
भाषा की समझ

इकाई 1 : भाषा क्या है?

इकाई 2 : भारतीय भाषाएँ

इकाई 3 : भाषा-अधिगम एवं भाषा शिक्षण

खंड प्रस्तावना

भाषा का यह कोर्स इसलिए बनाया गया है कि आप भाषा के विभिन्न पहलुओं से परिचित हो सकें। हमें उम्मीद है कि इस कोर्स को करने के बाद आप भाषा के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाएँगे और बच्चों को भाषा अधिक रोचक व चुनौतीपूर्ण ढंग से पढ़ा सकेंगे। **पहली इकाई** भाषा की प्रकृति, संरचना एवं उसके मनोवैज्ञानिक व सामाजिक पक्षों के बारे में है। **दूसरी इकाई** में हम आपको भारत की बहुभाषिता की एक झलक दिखायेंगे और इस बात की भी चर्चा करेंगे कि हजारों भाषाओं के होते हुए भी भारत एक भाषाई इकाई है। इसी इकाई में हम भारतीय संविधान में भाषा के बारे में दिए गए प्रावधानों की भी चर्चा करेंगे। **तीसरी इकाई** भाषा सीखने व सिखाने से संबंधित है। बच्चे भाषा सीखने की असीम क्षमता लेकर पैदा होते हैं और तीन–चार साल की ही आयु में भाषा समझने व बोलने में निपुण हो जाते हैं। बहुत कम समय में वे रोज कई नये वाक्य समझते और बोलते हैं। यह सचमुच एक आश्चर्य का विषय है कि बच्चे इतनी छोटी उम्र में कैसे अपनी भाषा के जटिल व्याकरण को पकड़ लेते हैं? क्या वे एक सार्वभौमिक व्याकरण लेकर पैदा होते हैं? इस बात पर भी सोच–विचार करेंगे। भाषा सीखने–सिखाने में व्याकरण का और पढ़ाने के तरीकों का क्या असर हो सकता है यह भी विचारणीय है। हम पढ़ाने के अलग–अलग तरीकों जैसे कि व्याकरण अनुवाद विधि (Grammar Translation Method), प्रत्यक्ष विधि (Direct Method), श्रवण– भाषण (सुनना–बोलना) विधि (Audio-lingual Method), सम्प्रेषणात्मक विधि (Communicative Approach) आदि पर चर्चा करेंगे।

विषय सूची

क्रम. सं.	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	इकाई 1 : भाषा क्या है?	1
2.	इकाई 2 : भारतीय भाषाएँ	21
3.	इकाई 3 : भाषा-अधिगम एवं भाषा शिक्षण	42

टिप्पणी

इकाई 1 भाषा क्या है?

संरचना

1.0 परिचय

1.1 अधिगम उद्देश्य

1.2 भाषा की परिकल्पना और महत्त्व

1.3 भाषा व व्याकरण

1.3.1 ध्वनि संरचना

1.3.2 शब्द संरचना

1.3.3 वाक्य संरचना

1.3.4 संवाद संरचना

1.4 मानकीकृत भाषा

1.5 भाषा के मनोवैज्ञानिक पक्ष

1.6 भाषा के सामाजिक पक्ष

1.7 भाषा व साहित्य

1.8 भाषा में प्रवीणता

1.9 सारांश

1.10 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.11 अंत्य इकाई अभ्यास

1.0 परिचय

इस इकाई में हम यह समझने की कोशिश करेंगे कि भाषा क्या है। भाषा की क्या परिभाषा होनी चाहिए, क्या परिकल्पना होनी चाहिए। व्याकरण के दृष्टिकोण से भाषा का स्वरूप कैसा है? ध्वनि, शब्द, वाक्य एवं संवाद के धरातल पर उसकी संरचना कैसी है? हम भाषा के मनोवैज्ञानिक व सामाजिक पक्षों के बारे में भी चर्चा करेंगे। बहुत ही संक्षेप में हम यह समझने की भी कोशिश करेंगे कि किसी भाषा में प्रवीण होने का क्या मतलब है और भाषा के मानकीकरण की क्या प्रक्रिया होती है। भाषा और साहित्य के संबंध के बारे में भी कुछ चर्चा करेंगे।

टिप्पणी

1.1 अधिगम उद्देश्य

यह इकाई विशेष रूप से भाषा की प्रकति एवं संरचना के बारे में है। हमें उम्मीद है कि इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- भाषा के स्वरूप से अवगत हो पाएँगे;
- भाषा और समाज के आपसी संबंध को समझ पाएँगे;
- भाषा के लिए मानव मस्तिश्क की जन्मजात अनुकूलता को रेखांकित कर पाएँगे;
- भाषा की संरचना का विश्लेषण कर पाएँगे;
- भाषा के मानकीकरण पर अपनी राय दे पाएँगे;
- भाषा में प्रवीणता का मतलब समझ पाएँगे; एवं
- आम बोलचाल की भाषा व साहित्यिक भाषा में अंतर स्पष्ट कर पाएँगे।

1.2 भाषा की परिकल्पना और महत्त्व

भाषा को अक्सर दो अलग–अलग दृष्टिकोणों से देखा जाता है। आम लोग भाषा को केवल बातचीत का एक माध्यम भर ही मानते हैं। भाषा की संरचना को समझने वाले भाषावैज्ञानिक उसे एक शब्दकोष व एक व्याकरण का योग भर मानते हैं। वास्तव में ये दोनों ही परिभाषाएँ भाषा के दायरे को बहुत सीमित कर देती हैं। इन दोनों परिभाषाओं में यह मान लिया जाता है कि भाषा पहले है और मनुष्य बाद में। यह समझने में कोई मुश्किल नहीं होनी चाहिए कि यह सच नहीं है। लोग नहीं होंगे तो भाषा कहाँ से होगी और भाषा नहीं होगी तो शब्दकोश किसका लिखेंगे और व्याकरण किसका लिखेंगे। पहले लोग होते हैं, एक समाज होता है और वे लोग मिलजुलकर अपनी भाषा को बनाते हैं। इस निर्माण की प्रक्रिया में भाषा के साथ कई और पहलू जुड़ जाते हैं जिनके बारे में न तो आम आदमी सोचते हैं और न ही अधिकतर भाषावैज्ञानिक। इसमें तो कोई शक नहीं कि जैसे–जैसे मानव का विकास हुआ, उसमें भाषा निर्माण व भाषा सीखने की क्षमता का भी विकास हुआ। लेकिन उस क्षमता का कोई फायदा नहीं होता अगर समाज नहीं होता। इसलिए भाषा की परिभाषा में यह समझने के लिए कि भाषा वास्तव में क्या होती है, हमें इंसान, उसके दिमाग व समाज के बारे में एक साथ सोचना होगा।

सबसे पहले तो भाषा एक इंसान की पहचान होती है। जब कोई यह कहता है कि मैं 'गोन्डी' बोलता हूँ तो वह केवल यह ही नहीं कह रहा है वह कौनसी भाषा बोलता है। वह यह भी बता रहा है कि वह किस समाज का सदस्य है और वह किस समाज के रीति–रिवाजों का पालन करता है। कहाँ के लोग उसको पहचानते हैं। दूसरी बात यह है कि भाषा अपनी संरचना में उन सब रिश्तों को भी दिखाती है जिनके सहारे एक समाज बना

टिप्पणी

रहता है। कौन बड़ा है, कौन छोटा है, कौन प्यार का पात्र है और कौन आदर का इन सबकी झलक हमें भाषा में मिल जाती है। वास्तव में भाषा और समाज में एक खास रिश्ता है। भाषा वह माध्यम है जो छोटे–बड़े और ऊँच–नीच के रिश्तों को सदियों तक बनाये रखती है।

मानसिक दृष्टिकोण से भी भाषा का विशेष महत्त्व है। यह देखकर सचमुच बहुत आश्चर्य होता है कि संसार का हर बच्चा चाहे वह किसी भी समाज में पलता हो और किसी भी भौगोलिक स्थिति में रहता हो चार वर्ष की उम्र तक कम से कम भाषा की दृष्टि से वह एक वयस्क बन जाता है। यानी चार वर्ष की आयु तक हर बच्चा भाषा की एक आधारभूत शब्दावली और वाक्य संरचना के मुख्य नियम सीख जाता है। हमें कभी यह कठिनाई नहीं होती कि हम चार वर्ष के बच्चे के साथ बातचीत कर सकें, उसे कहानी सुना सकें और उससे नित नई–नई कहानियाँ सुन सकें।

कुछ अन्य मानसिक पहलू भी हैं। दूरियाँ बढ़ाने का और दूरियाँ मिटाने का भाषा से अधिक सशक्त माध्यम और कोई नहीं है। हजारों कोस दूर बैठे अपने दोस्त से झगड़ा कर आप फोन पटक देते हैं और कुछ मिनट बाद फिर से फोन उठा उससे दोस्ती कर लेते हैं। कैसे? भाषा से!

यह भी आम बात है कि बच्चे एक ही नहीं अपितु अपने परिवार, गली–कूचे, आस–पड़ोस की वो सभी भाषाएँ सीख जाते हैं जो उनके आसपास बोली जाती हैं। भाषा सीखने की क्षमता केवल यहीं तक सीमित नहीं कि हम लोग केवल एक ही भाषा सीख सकते हैं। हर व्यक्ति भाषा के विविध स्वरूप व अनेक भाषाएँ व उनके विविध स्वरूप सीखने की क्षमता रखता है। वास्तव में बहुभाषिता मनुष्य के स्वाभाविक है और इंसान होने की एक ख़ास पहचान है।

संरचना के दृष्टिकोण से भी भाषा की कई विशेषताएँ हैं। अगली इकाइयों में हम उन पर गहराई से चर्चा करेंगे। लेकिन भाषा को एक समग्र दृष्टिकोण से समझने के लिए इतना तो यहाँ कहना जरूरी है कि भाषा ध्वनि, शब्द, वाक्य और बातचीत के स्तर पर पूरी तरह से नियमबद्ध होती है। ऐसा नहीं हो सकता कि हम जिन ध्वनियों को चाहें उनको जोड़कर शब्द बना लें और शब्दों को किसी भी मनचाहे क्रम में रखकर वाक्य बना लें। और वाक्यों को किसी भी मनचाहे क्रम में रखकर एक संवाद की रचना कर लें।

एक और बात जो भाषा की प्रकृति के बारे में समझना आवश्यक है वह यह कि भाषा निरन्तर बदलती रहती है। लेकिन यह बदलाव इतना धीरे–धीरे होता है कि अक्सर माँ–बाप को यही लगता है कि बच्चे वही भाषा बोल रहे हैं जो वह खुद बोलते हैं। वास्तविकता यह है कि परदादा–परदादी की भाषा से दोहता–दोहती की भाषा बहुत अलग होती है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न

1. आम तौर पर भाषावैज्ञानिक, भाशा को निम्न में से किन दो का योग भर मानते हैं?

   (क) शब्द व वाक्य (ख) ध्वनि व वाक्य

   (ग) शब्दकोश व व्याकरण (घ) ध्वनि व व्याकरण

2. बच्चों को भाषा सीखने में उनके आसपास का परिवेश कैसे मदद करता है?

3. भाषा इंसान की पहचान होती है। कैसे? स्पष्ट कीजिए।

1.3 भाषा व व्याकरण

लोग अक्सर शुद्ध और अशुद्ध भाषा में या भाषा व बोली में अलग–अलग तरह से अन्तर करते हैं। वास्तव में जहाँ तक अपनी भाषा/भाषाओं को बोलने का प्रश्न है, उसमें कोई गलती कर ही नहीं सकता और अगर कभी–कभार कोई भूल–चूक हो भी जाये तो आप उसे तुरन्त ठीक करने की क्षमता रखते हैं। अशुद्ध भाषा का सवाल तो तभी पैदा होता है जब आप किसी अन्य समाज की या बिल्कुल विदेशी भाषा सीख रहे हों। या तब पैदा होता है जब आप भाषा के किसी रूप–विशेष को मानकीकृत मान लें और उसी से जुड़े अन्य स्वरूपों को बोली या देहाती भाषा का नाम दे दें (इसके बारे में आगे विस्तार से चर्चा करेंगे)।

हर भाषा (उसे बोली कहें या कोई और नाम दें) व्याकरणयुक्त होती है। वह ध्वनि, शब्द, वाक्य व संवाद के स्तर पर नियमबद्ध होती है। इस बात को हम हर स्तर पर कुछ उदाहरण लेकर समझ सकते हैं।

1.3.1 ध्वनि संरचना

हर भाषा की अपनी ध्वनि व्यवस्था होती है लेकिन ध्वनि के कुछ नियम ऐसे भी होते हैं जो हर भाषा में पाये जाते हैं। उदाहरण के लिए हर भाषा में स्वर और व्यंजन होते हैं। वे अनेक हो सकते हैं और बहुत कम भी। संसार में शायद ही कोई ऐसी भाषा हो जिसमें 3 से कम स्वर हों, अधिक से अधिक 20 हो सकते हैं। व्यंजन 8–10 से लेकर 50–60 तक हो सकते हैं। आम भाषाओं में ध्वनियों की संख्या कुल मिलाकर 40–50 तक होती है। अंग्रेजी और हिन्दी के विविध स्वरूपों में इनकी संख्या इस प्रकार है–

	स्वर	व्यंजन	कुल
अंग्रेजी	20	24	44
हिन्दी	10	33	43

ये वे ध्वनियाँ नहीं हैं जो अक्सर वर्णमाला में लिखी जाती हैं। ये अंग्रेजी व हिन्दी की सार्थक ध्वनियाँ हैं। यानी इनके प्रयोग करने से शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं। उदाहरण के लिए,

अंग्रेजी में	fil	'fill'	
	fiil	'feel'	
हिन्दी में	mil	'mill'	मिल
	mill	'mile'	मील

इन चारों शब्दों से पता लगता है कि हिन्दी व अंग्रेजी दोनों में छोटी 'इ' व बड़ी 'ई' सार्थक ध्वनियाँ हैं। यदि सब कुछ वैसा ही रहे जैसा पहले था लेकिन 'इ' की जगह 'ई' कह दें तो अर्थ बिल्कुल बदल जायेगा। इसी तरह से–

अंग्रेजी में	kil	'kill'	
	pil	'pill'	
हिन्दी में	kal	'tomorrow/yesterday	कल
	pal	'moment'	पल

से पता चलता है कि दोनों भाषाओं में 'प्' और 'क्' सार्थक ध्वनियाँ हैं।

क्या हिन्दी व अंग्रेजी की इन 43–44 ध्वनियों को हम जैसे चाहें एक साथ रख सकते हैं? या फिर ध्वनियों को सजाने के कुछ नियम हैं, जो हर व्यक्ति अपनी भाषा के बारे में जानता है या स्वयं सीख लेता है और वह भी 4–5 साल की आयु में ही। मान लीजिए कि हम हिन्दी में शब्दों के शुरू में दो व्यंजन एक साथ रखना चाहते हैं जबकि पहला व्यंजन 'प्' ही हो। क्या आपको लगता है कि दूसरा व्यंजन कुछ भी हो सकता है। सोच कर देखें।

*प्काव	*प्खील	*प्गोल
*प्चाव	*प्चील	*प्छेल
*प्टाव	*प्टील	*प्ठेल
*प्ताव	*प्तील	*प्थेल आदि

तो क्या नियम हैं जो हम सब जानते हैं?

नियम–1: यदि शब्द के आरंभ में दो व्यंजन हों और पहला 'प्' हो, तो दूसरा केवल य्, र्, ल्,व् ही हो सकता है।

यह नियम आप स्वयं शब्द बनाकर या हिन्दी के किसी भी शब्दकोश से सहज जाँच सकते हैं।

ध्वनि–आधारित एक और नियम देखते हैं। ज़रा सोचिए हिन्दी व अंग्रेजी दोनों में ही किसी भी शब्द के आरंभ में किसी स्वर ध्वनि आने से पहले अधिक से अधिक कितनी व्यंजन ध्वनियाँ आ सकती हैं। पहले यह समझ लें कि **'psychology'** जैसे शब्द में **'0'** स्वर ध्वनि आने से पहले 5 नहीं केवल 1 ही व्यंजन ध्वनि है और वह है 'स्'। अंग्रेजी में **'stress'** शब्द में 'ई' स्वर की ध्वनि आने से पहले तीन व्यंजन ध्वनियाँ हैं– 'स्' 'ट्' और 'र्'। 'स्ट्रीट'।

हिन्दी में देखें:	स्मृति	'smriti'	memory
	स्क्रू	'skru'	screw
अंग्रेजी में देखें:	spray		
	street		
	scratch		
	splash		
	squash आदि		

क्या हिन्दी और अंग्रेजी में कोई भी ऐसा शब्द नहीं है जिसमें 4 या 4 से अधिक व्यंजन ध्वनियाँ किसी शब्द के आरंभ में आती हों? सोचें! अन्य भाषाएँ जो आप जानते हैं उनके बारे में सोचें। तो ध्वनि के संसार में हिन्दी व अंग्रेजी के लिए हम एक और नियम बना सकते हैं।

नियम–2:

(क) किसी भी शब्द के आरंभ में स्वर ध्वनि आने से पहले, 4 या उससे अधिक व्यंजन नहीं हो सकते।

(ख) यदि 3 व्यंजन होंगे तो वह भी विशेष होंगे और उन्हें एक विशेष क्रम में ही रखा जा सकता है। यदि हम तीन व्यंजनों को क्रमश: C_1, C_4 व C_3 कहें तो

C_1 केवल 'स्' हो सकता है।

C_2 केवल 'प्' 'त्' 'क्'।

C_3 केवल 'य्' 'र्' 'ल्' 'व्' हो सकता है।

इस चर्चा से आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि भाषा में ध्वनियों का संसार कितना सुव्यवस्थित है।

1.3.2 शब्द संरचना

शब्दों के स्तर पर भी भाषा सुव्यवस्थित है। एकवचन से बहुवचन कैसे बनेगा या संज्ञा से विशेषण कैसे बनेगा। यह सब शब्द निर्माण संबंधी नियमों से ही निर्धारित होता है। यह सच है कि अलग–अलग तरह के शब्द–समूहों के लिए अलग–अलग तरह के नियम होंगे– यथा व्यंजनांत संज्ञा के लिए एक नियम तो आकारान्त संज्ञा के लिए दूसरा। लेकिन होगा सब नियमों के आधार पर ही।

हिन्दी में 'घर' व 'लड़का' दोनों पुल्लिंग हैं। एकवचन भी हैं। इनके बहुवचन क्या होंगे? हम सब जानते हैं, पर वो कौनसे नियम हैं जो हर हिन्दी भाषी के दिमाग में रहते हैं पर वह उन पर विस्तृत रूप से चर्चा नहीं कर सकता। अब आप ही बताइए कि 'लड़के' एकवचन है या बहुवचन। आइए कुछ वाक्य देखें :

1. लड़के फुटबाल खेल रहे हैं।
2. लड़के ने खाना खाया।
3. मोहन के पास कई घर हैं।
4. यह घर बहुत सुन्दर है।

वाक्य 1 और 3 में तो यह साफ़ है कि 'लड़के' व 'घर' दोनों ही बहुवचन हैं। (दोनों में बहुवचन 'हैं' का प्रयोग हुआ है)। लेकिन 2 और 4 में 'लड़के' और 'घर' एकवचन हैं।

आइए इस समस्या को समझने का प्रयास करते हैं क्योंकि अंग्रेजी में और संसार की कई अन्य भाषाओं में भी केवल एक ही प्रकार का 'बहुवचन' रूप होता है। इसलिए हम यह मानकर चलते हैं कि हिन्दी में भी एक ही बहुवचन रूप होगा। ऐसा नहीं है। संस्कॉत में न केवल एकवचन, द्विवचन व बहुवचन होते हैं बल्कि हर संज्ञा के इन तीनों वचनों में 15–16 अलग–अलग रूप होते हैं। हिन्दी में भी हर संज्ञा के लिए एक या दो नहीं अपितु तीन बहुवचन होते हैं और वे सब कुछ नियमों के आधार पर बनते हैं। कई बार एक ही रूप एकवचन व बहुवचन दोनों हो सकता है, जैसे 1 से 4 तक में 'लड़के' व 'घर'। निम्न तालिकाओं को देखें:

घर

कर्त्ता	घर	घर
विभक्ति पूर्व	घर	घरों
संबोधन	घर!	घरो!

लड़का

कर्त्ता	लड़का	लड़के
विभक्ति पूर्व	लड़के	लड़कों
संबोधन	लड़के!	लड़को!

स्पष्ट है कि हिन्दी में हर संज्ञा के 2–3 ही नहीं बल्कि 6 रूप होते हैं। इनमें से कुछ रूप एक से दिखते हैं पर उनका अलग–अलग संदर्भों में प्रयोग होता है और उनके अलग–अलग अर्थ होते हैं। इसीलिए 1 में तो 'लड़के' बहुवचन है (कर्त्ता) पर 2 में एकवचन (विभक्ति पूर्व, 'ने' से पहले)। देखने में तो 'घर' के तीन रूप हैं: घर, घरों, घरो! 'लड़का' के चार रूप हैं: लड़का, लड़के, लड़कों व लड़को। पर प्रयोग के आधार पर 6 ही रूप होंगे।

'लड़का' संज्ञा के प्रयोग के आधार पर 6 ही रूप मानने पड़ेंगे:

5. लड़का खेल रहा है।
6. लड़के खेल रहे हैं।

टिप्पणी

7. लड़के ने खाना खाया।
8. लड़कों ने खाना खाया।
9. ओ लड़के, इधर आ।
10. ओ लड़को, इधर आओ।

वाक्य 5 में 'लड़का' कर्त्ता है, वाक्य 6 में 'लड़के' बहुवचन है और कारक रूप कर्त्ता का ही है। पर वाक्य 7 में 'लड़के' एकवचन है, कारक रूप कर्त्ता ही है लेकिन उसके बाद 'ने' विभक्ति आ गई है। वाक्य 8 में 'लड़कों' बहुवचन कर्त्ता है लेकिन विभक्ति आने के कारण रूप 'लड़के' नहीं हो सकता, 'लड़कों' ही होगा। वाक्य 9 में 'लड़के' एकवचन सम्बोधन है व वाक्य 10 में 'लड़को' बहुवचन सम्बोधन है।

शब्दों की दुनिया का एक और उदाहरण लेते हैं। शब्द निर्माण प्रक्रिया के अंग्रेजी और हिन्दी में कई ऐसे तरीके हैं जिनसे संज्ञा से विशेषण बनते हैं। अंग्रेजी में शब्दों का एक समूह है जिसमें केवल 'ई' लगाने से विशेषण बन जाता है। उदाहरण के लिए rain, fun, sun, fish, cloud आदि में केवल 'ई' लगाने से विशेषण बन जायेंगे। लिखने में यह ध्वनि, 'y' के रूप में सामने आती है। यथा rainy, funny, sunny, fishy, cloudy आदि। हिन्दी में भी एक शब्द समूह ऐसा है जिसमें 'ई' लगाने से संज्ञा से विशेषण बन जाते हैं। उदाहरण के लिए 'सरकार, बैंगन, अपराध' आदि संज्ञा से विशेषण 'सरकारी, बैंगनी, अपराधी आदि बनते हैं।

1.3.3 वाक्य संरचना

ऊपर आये 5 से 10 तक के वाक्यों को नीचे दिए गए वाक्यों के साथ मिलाकर फिर से देखें:

11. लड़की खेल रही है।
12. लड़कियाँ खेल रही हैं।
13. लड़की ने खाना खाया।
14. लड़कियों ने खाना खाया।
15. लड़के ने लड़की को मारा।
16. लड़की ने लड़के को मारा।
17. लड़के ने रोटी खाई।
18. लड़की ने रोटी खाई।

यदि हम वाक्य 5 से वाक्य 18 तक की वाक्य–संरचना का ध्यान से पढ़ें तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि भाषा वाक्य के स्तर पर शब्दों व ध्वनियों के स्तर से भी कहीं अधिक सुव्यवस्थित है। वाक्य 5, 6, 9, 10, 11 और 12 से साफ है कि हिन्दी में कर्त्ता और क्रिया में गहरा सम्बन्ध होता है। वास्तव में क्रिया को कर्त्ता के लिंग, वचन व पुरुष के हिसाब से बार–बार बदलना पड़ता है। यह बात नीचे दिये गये वाक्यों से और भी स्पष्ट हो जाती है:

टिप्पणी

- राम खाना खाता है।
- सीता खाना खाती है।
- तू खाना खाता है।
- तुम खाना खाते हो।
- तुम खाना खाती हो।
- आप खाना खाते हैं।
- आप खाना खाती हैं।
- मैं खाना खाता हूँ।
- मैं खाना खाती हूँ।
- हम खाना खाते हैं।

इन वाक्यों के आधार पर आप खुद ही हिन्दी में कर्त्ता क्रिया के एक छोटे से टुकड़े में निहित जटिल सम्बन्ध को समझने की कोशिश करें।

हम वाक्य 5 से 18 पर वापस लौट जाते हैं। हमें देखना है कि वाक्य 7, 8, 13, 14, 15, 16, 17 व 18 में कर्त्ता से क्रिया का वैसा सम्बन्ध नहीं दिखाई दे रहा जैसा हमने वाक्य 5, 6, 9, 10, 11 व 12 में या ऊपर दिये अन्य वाक्यों में देखा। वाक्य 7, 8 में क्रिया का रूप कर्त्ता के साथ न बदलकर कर्म के अनुसार बदल रहा है। यही बात वाक्य 17 और 18 में भी है। 7 और 8 में कर्म पुल्लिंग है तो क्रिया भी पुल्लिंग है। 17 व 18 में कर्म स्त्रीलिंग है तो क्रिया भी स्त्रीलिंग। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कर्त्ता पुल्लिंग है या स्त्रीलिंग। नियम यह है कि यदि कर्त्ता के आगे विभक्ति आयेगी तो क्रिया कर्म के अनुसार बदलेगी। वाक्य 13 व 14 में कर्त्ता स्त्रीलिंग है। आइए देखे कि वाक्य 15 व 16 में क्या हो रहा है। यहाँ क्रिया किसके अनुसार बदल रही है। कर्त्ता और कर्म दोनों के आगे ही विभक्ति लगी है। कहीं 'ने' तो कहीं 'को'। ऐसे हालात में 'मारा' आदि ही हो सकता है। यानी कर्त्ता और कर्म कुछ भी हों यदि उनके आगे विभक्ति है तो क्रिया का रूप 'अन्य पुरुष एकवचन भूतकाल' ही होगा।

1.3.4 संवाद संरचना

जिस प्रकार भाषा ध्वनि, शब्द व वाक्य के स्तर पर नियमबद्ध है उसी प्रकार संवाद के भी कई नियम होते हैं जिनका समाज में बातचीत करते हुए उल्लंघन नहीं किया जा सकता। यह संवाद का एक नियम है कि जब एक व्यक्ति बात कर रहा हो तो दूसरे को उसकी बात बीच में काटनी नहीं चाहिए। बातचीत में कई बार भ्रांतियाँ पैदा हो जाती हैं क्योंकि हम एक दूसरे की बात ध्यान से पूरी तरह सुनते ही नहीं।

कई बार ऐसा होता है कि बातचीत करते हुए सुनने वाला व्यक्ति बहुत नाराज हो जाता है लेकिन जब बात साफ की जाती है तो उसे समझ आता है कि वक्ता ने तो कुछ ऐसा कहा

टिप्पणी

ही नहीं था। भाषा और विचार के स्तर पर भी कई ऐसे लक्षण हैं जो वाक्यों की लड़ी को एक संवाद में बुन देते हैं। उदाहरण के लिए 'वह, उसने, पर, और, क्योंकि, इसलिए आदि' ऐसे शब्द हैं जिनके बिना संवाद की कल्पना करना संभव नहीं है। मानो कोई कहता है: मुझे इसलिए देर हो गई क्योंकि रास्ते में ट्रैफिक बहुत था। यदि इस वाक्य में से हम 'इसलिए' और 'क्योंकि' निकाल दें तो यह वाक्य लगभग निरर्थक हो जायेगा। विचारों के स्तर पर एक संवाद तभी सार्थक होता है जब उसमें आए वाक्य एक विशेष क्रम में लगे हों। जैसे ही वह क्रम टूटेगा पूरा संवाद शब्दों का एक निरर्थक जाल भर रह जाएगा।

कक्षा कक्ष में बच्चों से किसी विषय पर वाद–विवाद करना, भाषण दिलवाना और दूसरे बच्चों को वक्ता से प्रश्न पूछने आदि ऐसे अभ्यास है जिनसे बच्चे यह सीखते हैं कि किसी दूसरे से यह समूह में कैसे संवाद किया जाए सीखते हैं।

पाठगत प्रश्न

1. हिन्दी में संज्ञा के रूप होते हैं–

   (क) पाँच (ख) तीन

   (ग) दो (घ) छह

2. यदि शब्द के शुरू में तीन व्यंजन ध्वनियाँ होंगी तो

   – पहली व्यंजन ध्वनि केवल 'स्'

   – दूसरी व्यंजन ध्वनि केवल 'प्', 'त्' या 'क्'

   – तीसरी व्यंजन ध्वनि केवल 'य्', 'र्', 'ल्' या 'व्' होंगी

   क्या आप इस बात से सहमत हैं? कुछ शब्दों का विश्लेषण कर इसे स्पष्ट कीजिए।

   ....

   ....

   ....

3. राम खाना खाता है।

   सीता खाना खाती है।

   दोनों वाक्यों को देखकर बताइये, कर्त्ता व क्रिया में क्या संबंध है?

   ....

   ....

   ....

1.4 मानकीकृत भाषा

मानकीकरण की परंपरागत प्रक्रिया में कई चरण हैं। पहला चरण तो यह है कि किसी समाज में प्रचलित भाषाओं में से एक विशेष भाषा को चुना जाता है। यह भाषा अक्सर समाज के उस वर्ग की होती है जो सत्ता में होता है। उच्च कोटि के ब्राह्मण सत्ता में होंगे तो मानकीकृत भाषा संस्कृत होगी। अरब से आए लोग सत्ता में होंगे तो अरबी होगी और यदि फारसी बोलने वाले राज करेंगे तो फारसी होगी। जब अंग्रेजों का राज आया तो भारत की सब भाषाओं को छोड़कर अंग्रेजी का बोल–बाला हो गया। दूसरा चरण यह है कि इन भाषाओं की अनेक शैलियों/बोलियों में से कौनसी शैली या बोली चुनी जाएगी। एक बार फिर वही शैली या बोली चुनी जाती है जो सत्ताधारी वर्ग से जुड़ी होती है। जब अंग्रेजी की बात होगी तो अंग्रेजी के उस रूप का विकास होगा जो ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज के आस–पास बोला जाता है। जब हिन्दी की बात होगी तो खड़ी बोली की बात होगी और ब्रज और अवधी जैसी भाषाएँ हिन्दी की बोलियाँ कहलाने लगेंगी। तीसरे चरण में चुने हुए रूप के व्याकरण लिखे जाते हैं व अलग–अलग तरह के शब्दकोश बनते हैं। कई तरह के संदर्भग्रंथ लिखे जाते हैं। इसी शैली में सरकार का कामकाज होता है व अख़बार और पत्रिकाएं आदि छपते हैं। यही शैली शिक्षा का माध्यम बनती है और प्रचार का भी। इन्हीं सब गतिविधियों के माध्यम से भाषा का मानकीकरण होता है। मानकीकरण के चौथे व अंतिम चरण में भाषा का हर क्षेत्र में, हर संभव तरीके से विकास करने के प्रयास किए जाते हैं। मानकीकरण की इस चरम सीमा पर एक ही व्याकरण या एक ही शब्दकोश नहीं होता बल्कि उस भाषा के अनेक व्याकरण व अनेक शब्दकोश बन जाते हैं। वास्तव में हर विषय का अपना शब्दकोश अलग से लिखा जाने लगता है।

मानकीकरण की प्रक्रिया सामाजिक शोषण की प्रक्रिया से जुड़ी है। होता यह है कि किसी भी समाज में प्रचलित अनेक भाषाओं में से किसी एक को चुन लिया जाता है और यह चुनाव ज्यादातर इस आधार पर होता है कि कौन ताकतवर है, किसके पास धन है, किसके पास राजनैतिक शक्ति है।

पाठगत प्रश्न

1. मानकीकृत भाषा अक्सर समाज के उस वर्ग की होती है जो ....में होता है।
2. मानकीकरण की परम्परागत प्रक्रिया सामाजिक शोषण की प्रक्रिया से कैसे जुड़ी है?

    ....

    ....

    ....

टिप्पणी

3. भाषा की यह प्रकृति है कि वह निरन्तर बदलती रहती है। फिर भाषा का मानकीकरण करना कहाँ तक उचित है? अपने विचार दीजिए।

....

....

....

1.5 भाषा के मनोवैज्ञानिक पक्ष

यह तो निश्चित है कि भाषा का इंसान के दिमाग से कोई न कोई गहरा सम्बन्ध ज़रूर है। अक्सर देखा गया है कि सिर के किसी खास हिस्से में चोट लगने से और सब तो ठीक रहता है लेकिन भाषा कई बार विचलित हो जाती है। कभी समझ आना बंद हो जाता है तो कभी बोलना अस्थिर हो जाता है। कभी शब्द–निर्माण प्रक्रिया में परेशानी हो जाती है तो कभी वाक्य बनाने में उलझन।

दूसरी बात यह है कि शायद हर बच्चा भाषा का एक सार्वभौमिक स्वरूप लेकर पैदा होता है। जैसे हम देखने, सुनने व चलने की शारीरिक व मानसिक तैयारी के साथ पैदा होते हैं वैसे ही शायद भाषा की एक छवि हमारे दिमाग में रहती है। संसार की सभी भाषाओं में संज्ञा, क्रिया, विशेषण जैसे शब्दों के समूह पाये जाते हैं। सभी में कर्त्ता, कर्म जैसे संबंध और सभी में कोई न कोई ऐसा तरीका अवश्य होता है जिससे विशेषण व संज्ञा में या कर्त्ता व क्रिया में संबंध दिखाया जा सके। और, यह भी सच है कि संसार का हर सामान्य बच्चा (यदि उसमें दिमागी तौर पर कोई कमी नहीं हो) तीन–चार साल की उम्र तक अपने आस–पास बोली जाने वाली सभी भाषाएँ सीख लेता है। जैसा कि आपने ऊपर 1.4 में देखा, भाषा की संरचना एक साथ कई स्तरों पर नियमबद्ध, सुव्यवस्थित व जटिल है। यदि हम किसी सार्वभौमिक व्याकरण की परिकल्पना नहीं करते तो भाषा का इतनी सरलता से, इतने स्वाभाविक रूप से इतनी कम उम्र में सीख जाना संभव नहीं लगता। आपने देखा होगा कि बच्चे कभी भी अपनी भाषा में कोई गलती नहीं करते और यदि कहीं गलती से भी उनके मुँह से कोई गलत वाक्य निकल जाए तो उसे वह तुरन्त सुधार लेते हैं।

'स्कूटर' को बच्चे 'कूटर' ही कहेंगे और 'गर्म' को 'गरम'। वाक्य के स्तर पर भी छोटे बच्चे शुरू–शुरू में जटिल वाक्य नहीं बोल पाते हैं और अपनी बात कहने के लिए बहुत से ऐसे शब्द उपयागे नहीं करते हैं जिनके बिना काम चल सकता है। उदाहरण के लिए 'आज मुझे स्कूल जाना है' ना कह कर बच्चा कहेगा 'कूल जाना'।

ऊपर कही गयी बातें भाषा के कुछ मनोवैज्ञानिक पक्षों की ओर इशारा करती हैं। बच्चे एक जन्मजात भाषाई क्षमता लेकर पैदा होते हैं जो उनके सामाजिक परिवेश के छूते ही एक समृद्ध और जटिल भाषा के रूप में खिल उठती है। इस जन्मजात क्षमता में एक सार्वभौमिक व्याकरण की छवि रहती है और भाषा सीखने की यात्रा में बच्चा एक पूर्व विदित पड़ावों की लड़ी में से गुजरता है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न

1. (क) बच्चों में भाषा सीखने की .... क्षमता होती है

   (ख) हर बच्चा भाषा का एक .... स्वरूप लेकर पैदा होता है।

2. सिर के किसी खास हिस्से में चोट लगने से भाशा संबंधी क्या–क्या समस्याएँ आ सकती हैं?

   ....

   ....

   ....

3. बच्चे जन्म से ही भाषाई क्षमता लेकर पैदा होते हैं। तो क्या एक बच्चे को जन्म लेते ही जंगल में अकेले छोड़ दिया जाए तो वह भाषा सीख जाएगा? यदि नहीं तो जन्मजात क्षमता होते हुए भी भाषा सीखने के लिए क्या जरूरी है?

   ....

   ....

   ....

4. भाषा सीखने के औपचारिक व स्वाभाविक तरीके में क्या फर्क है?

   ....

   ....

   ....

1.6 भाषा के सामाजिक पक्ष

भाषा और समाज के बारे में हम पहले भी चर्चा कर चुके हैं। जब बच्चे भाषा सीखते हैं तो वे केवल भाषागत प्रवीणता ही हासिल नहीं करते अपितु समाज में भाषा का प्रयोग कैसे करना है यह भी सीखते हैं। व्यक्ति, स्थान और विषय के अनुसार भाषा कैसे बदलनी है यह बात बच्चे बहुत जल्दी सीख जाते हैं। इसी तरह विभिन्न संदर्भों में प्रयुक्त भिन्न–भिन्न भाषा रूपों को वे समझ भी लेते हैं और यह क्षमता भी हासिल कर लेते हैं कि उन सब को कैसे समझना है।

एक सार्वभौमिक व्याकरण के रहते भी बच्चा वही भाषाएँ सीखता है जो उसके परिवेश में बोली जाती हैं। यही नहीं वह इन्हीं भाषाओं के माध्यम से अपने समाज के इतिहास, रीति–रिवाज व संस्कृति को भी आत्मसात करता है। हर बच्चे को यह सीखना पड़ता है कि किस परिस्थिति में किस आदमी के साथ किस समय पर कैसे बात करनी चाहिए। वास्तव में हमारे शब्दों का चयन व हमारी भाषा शैली निम्नलिखित बातों से तय होती है: बातचीत

का संदर्भ, जिस आदमी से हम बात कर रहे हैं, जिस जगह पर बात कर रहे हैं और जिस विषय पर बात कर रहे हैं। आप जिस तरह अपने घर पर खाने–पीने के बारे में अपनी माता से बात करते हैं उस तरह अपने पिता से स्कूल की पढ़ाई–लिखाई के बारे में बात नहीं करते। जो शब्द और वाक्य संरचनाएँ आप अपने दोस्तों/सहकर्मियों के साथ इस्तेमाल कर सकते हैं वे अपने विद्यार्थियों आदि के साथ नहीं कर सकते।

सामाजिक विविधता की एक झलक हमें भाषा में भी मिलती है। कई बार एक ही समाज में रहने वाले अलग–अलग जाति व वर्ग समूहों में काफी अन्तर होता है। इसी प्रकार भौगोलिक स्तर पर भी हर 15–20 किलोमीटर की दूरी पर रहने वाले समूह की भाषाओं में अन्तर होता है। यह सच है कि यह अन्तर वाक्य संरचना के धरातल पर न्यूनतम होता है और ध्वनि संरचना के धरातल पर सबसे अधिक। यह ध्वनि संरचना के आधार पर ही संभव है कि लोग अक्सर यह बता देते हैं कि आप इस गाँव से नहीं, उस गाँव से हैं।

दिल्ली में ही कुछ लोग 'मज़ा' कहते हैं और कुछ 'मजा', कुछ 'ज़फ़र' कहते हैं और कुछ 'जफर'। ऐसे उच्चारणों के भेद से लोग कई तरह के निष्कर्ष निकाल लेते हैं जैसे कि: 'यह पढ़ा–लिखा नहीं लगता', 'लगता है गरीब खानदान से है', 'शायद कभी पुरानी दिल्ली की तरफ नहीं गया' आदि। आपका 'स्कूल' को 'इसकूल' या 'सकूल' बोलना आपके बारे में बहुत कुछ बता देता है। इस प्रकार भाषाई विविधता सामाजिक विविधता से प्रत्यक्ष रूप से घुली–मिली है।

जैसा कि हम दूसरी इकाई में देखेंगे भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ के समाज के लिए यह आम बात है कि एक ही व्यक्ति एक ही दिन में अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग भाषाएँ बोले। यह आम बात है कि यदि आपका विद्यालय अंग्रेजी माध्यम का है तो आपके कक्षा के मेवाड़ की बच्ची अपने घर में तो मेवाड़ी बोलती होगी, अपनी सहेलियों के साथ हिन्दी और आपसे अंग्रेजी। यह भी संभव है कि वह अपने घर में और मन्दिर में हर दिन पूजा–पाठ संस्कृत में करती हो। अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग भाषाएँ इस्तेमाल करने की प्रवृत्ति आमतौर पर बहुभाषी माने जाने वाले देशों में ही प्रचलित नहीं है। ऐसे देश जो आमतौर पर एकभाषी मान लिए जाते हैं उनमें भी क्षेत्र के अनुसार लोग भाषा में निरन्तर शैली परिवर्तन करते हैं। उदाहरण के लिए अमेरिका में गलियों में बोली जाने वाली अंग्रेजी विद्यालयों में बोली जाने वाली अंग्रेजी से बिलकुल अलग है।

पाठगत प्रश्न

1. हर 15–20 किलोमीटर की दूरी पर रहने वाले समूह की भाषाओं में अन्तर अधिकतम किस स्तर पर होता है।

   (क) वाक्य के स्तर पर (ख) शब्द के स्तर पर

   (ग) ध्वनि के स्तर पर (घ) संवाद के स्तर पर

2. 'भाषाई विविधता सामाजिक विविधता से प्रत्यक्ष रूप से घुली–मिली है।' कैसे?

....

....

....

3. बातचीत के दौरान शब्दों का चयन व भाषा शैली किन बातों पर निर्भर करती है?

....

....

....

1.7 भाषा व साहित्य

वैसे तो भाषा हर रूप में सार्थक है। सुनकर दूसरे की बात समझने में, बोलकर अपनी बात समझाने में या पढ़ने में। लेकिन साहित्य में भाषा का जो रूप हमारे सामने आता है वह सचमुच अनोखा है। कविता, कहानी, नाटक आदि में भाषा की जो छवि देखने को मिलती है उसका विश्लेषण भाषा वैज्ञानिकों के लिए सदा एक चुनौती रहा है। साहित्य में प्रयुक्त भाषा का ध्वनि, शब्द, वाक्य व संवाद के स्तर पर विश्लेषण करने से ही पता चलेगा कि आम भाषा व साहित्य की भाषा में क्या अंतर होता है। अगर आप 'करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' को आम गद्य की भाषा में लिखें तो आपको अंतर का कुछ अहसास होगा। दरअसल इस अंतर का महत्त्वपूर्ण कारण साहित्य की भाषा में भाषा संबंधी कुछ कलात्मक उपकरणों जैसे– उपमा, रूपक, पर्यायवाची, अनुरणात्मक शब्द आदि का प्रयोग है। इनके प्रयोग से शब्द और अर्थ दोनों में चमत्कार उत्पन्न होता है। उपमा से तात्पर्य है दो भिन्न वस्तुओं अथवा व्यक्तियों के बीच समान गुण–धर्म के आधार पर समानता दिखाना। जैसे– कश्मीर स्वर्ग के समान सुंदर है। यहाँ कश्मीर (उपमेय) को सुंदरता में स्वर्ग (उपमान) के समान दिखाया है। 'रूपक' में दो भिन्न वस्तुओं अथवा व्यक्तियों के बीच भेदरहित संबंध ा को दर्शाया जाता है। जैसे– कश्मीर स्वर्ग है। यहाँ कश्मीर और स्वर्ग में कोई भेद नहीं दिखाया गया है। समानार्थी या पर्यायवाची शब्दों से तात्पर्य वैसे शब्दों से हैं जो रूप की दृष्टि से आपस में भले ही भिन्न हों लेकिन अर्थ की दृष्टि से लगभग समान हों। जैसे– पुत्री, तनया, तनुजा, आत्मजा, बेटी, कन्या, दुहिता, सुता, लड़की आदि। अनुरणात्मक या ध्वनि अनुरणन वाले शब्द (Onomatopiea) वैसे शब्दों को कहते हैं जो विभिन्न प्रकार की ध्वनियों पर आधृत होते हैं। जैसे– गटागट (वह गटागट दूध पी गया), सरपट (राहुल सरपट भागा), झटपट (झटपट इधर आओ) आदि। इन शब्दों का प्रयोग वाक्य में क्रिया विशेषण के रूप में होता है।

भाषा संबंधी इन कलात्मक उपकरणों के प्रयोग से भाषा में नवीनता एवं विशिष्टता का

टिप्पणी

समावेश होता है जिससे आम बोलचाल की भाषा एवं साहित्य की भाषा में अंतर पैदा होता है। इकाई 7 में इन उपकरणों पर विस्तार से बात की गई है।

पाठगत प्रश्न

1. 'पुत्री' का पर्यायवाची इनमें से कौन नहीं है?

   (क) तनुजा (ख) आत्मजा

   (ग) अनुजा (घ) तनया

2. उपमा, रूपक और अनुरणात्मक या ध्वनि अनुरणन वाले शब्दों के दो–दो उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।

   ....

   ....

   ....

3. उपमा व रूपक में अंतर स्पष्ट कीजिए।

   ....

   ....

   ....

1.8 भाषा में प्रवीणता

हम कब कह सकते हैं कि कोई व्यक्ति भाषा में प्रवीण हो गया। इस बात के दो पक्ष हैं। एक तो यह कि एक दृष्टिकोण से अपनी भाषा में चार साल की आयु का शिशु पूर्ण रूप से प्रवीण होता है। दूसरा पक्ष यह है कि आप कभी भी किसी भी भाषा में पूर्ण रूप से प्रवीण हो ही नहीं सकते। यह भी सोचने की बात है कि आप अपने आसपास बोली जाने वाली अपने परिवार व अपने समाज की भाषाएँ सीख रहे हैं या अपने शहर में बोली जाने वाली कोई दूसरी भाषा सीख रहे हैं या फिर कोई विदेशी भाषा।

भाषा सीखने की दो मुख्य परिस्थितियाँ मानी जाती हैं: स्वाभाविक व औपचारिक। स्वाभाविक से तात्पर्य उन परिस्थितियों से है जिसमें सामान्यत: बच्चे बिना किसी के सिखाए अपने आसपास की भाषाएँ स्वयं सीख लेते हैं। स्वभाविक रूप से भाषा सीखने की प्रक्रिया में कोई माँ–बाप या रिश्तेदार औपचारिक ढंग से बैठकर अपने बच्चों को भाषाएँ नहीं सिखाते और ना ही उनकी सीखने की प्रक्रिया के बारे में कोई विशेष चिन्ता करते हैं। इस परिस्थिति में उनकी गलतियों पर हँसा नहीं जाता बल्कि प्यार से अपने साथियों के साथ साझा (share) किया जाता है। आश्चर्य की बात यह है कि फिर भी बच्चे बहुत ही सहज भाव से भाषा सीख लेते हैं।

औपचारिक परिस्थितियों में कक्षा आदि का माहौल रहता है, शिक्षक होते हैं, किताबें होती हैं व भाषा सिखाने के कई अन्य साधन जुटाए जाते हैं। जैसे कि रेडियो, सीडी प्लेयर व भाषा–प्रयोगशाला। हैरानी इस बात की है कि इतने प्रयासों के बाद भी बच्चे उस भाषा को उतनी प्रवीणता से नहीं सीख पाते जितनी कि वे स्वाभाविक परिस्थितियों में सीख लेते हैं। हाँ यह जरूर सच है कि यदि बच्चों को छोटी उम्र में ही, खास कर 5–6 साल की उम्र से पहले ऐसे समाज में ले जाया जाय जहाँ उस भाषा का प्रयोग स्वाभाविक रूप से होता है तो बच्चे फिर से बहुत ही सहज और सरल तरीके से दूसरी या तीसरी भाषा सीख लेते हैं। इन सब बातों पर तीसरी इकाई में विस्तार से चर्चा होगी।

जहाँ तक भाषा में प्रवीणता का सवाल है हम लोग प्रवीणता का मूल्यांकन अधिकतर सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना आदि के टुकड़ों में ही करते आए हैं जबकि हम भली–भाँति जानते हैं कि भाषा का प्रयोग टुकड़ों में नहीं बल्कि इन कौशलों की समग्रता में होता है। उदाहरण के लिए मान लीजिए कि आप किसी डॉक्टर को फोन करते हैं क्योंकि आपको किसी दवाई का नाम पूछना है। डॉक्टर से बात करते वक्त आप सुन भी रहे हैं और बोल भी रहे हैं, लिख भी रहे हैं और पढ़ भी रहे हैं। यानी चारों कौशलों का एक साथ प्रयोग हो रहा है। इसलिए भाषा में प्रवीणता का आकलन एवं मूल्यांकन इन कौशलों की समग्रता में होना चाहिए। दसवीं इकाई में हम इस विषय पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

यहाँ प्रवीणता के बारे में इतना ही कहना काफी होगा कि हर बच्चा अपनी बोलचाल की भाषा में स्कूल में आने से पहले ही प्रवीण होती है। भाषा में यह प्रवीणता उसे बिना किसी प्रयास के अपने घरेलू वातावरण से हासिल हो जाती है।

पाठगत प्रश्न

1. भाषा सीखने के औपचारिक तरीकों में निम्न में से क्या शामिल नहीं है?

   (क) शिक्षक (ख) भाषा प्रयोगशाला

   (ग) स्कूल (घ) घरेलू परिवेश

2. भाषा सीखने की कौनसी दो मुख्य परिस्थितियाँ मानी जाती हैं?

   ....

   ....

   ....

3. बच्चा अपनी मातृभाषा में प्रवीणता कैसे हासिल करता है?

   ....

   ....

   ....

4. भाषा में प्रवीणता की जाँच किन आधारों पर होनी चाहिए?

....

....

....

1.9 सारांश

- भाषा केवल बातचीत का माध्यम भर नहीं है और न ही शब्दकोश एवं व्याकरण का योग मात्र है।
- भाषा एक इंसान की पहचान होती है। भाषा से ही वक्ता के व्यक्तित्व की पूरी जानकारी मिल जाती है।
- भाषा किसी समाज में रहने वाले व्यक्तियों के आपसी रिश्तों को बयान करती है और तमाम तरह की सामाजिक–आर्थिक ऊँच–नीच को दर्शाती है।
- संसार के किसी भी हिस्से में रहने वाला बच्चा चार वर्ष की आयु तक भाषागत दृष्टि से वयस्क हो जाता है। वह भाषा की आधारभूत शब्दावली और वाक्य संरचना के प्रमुख नियम सीख जाता है।
- हर भाषा व्याकरण युक्त होती है तथा ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य एवं संवाद के स्तर पर पूरी तरह से नियमबद्ध होती है। भाषा की इन सभी इकाइयों की एक सुनियोजित व्यवस्था होती है जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।
- भाषा परिवर्तनशील है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी की भाषा थोड़ी भिन्न होती है।
- हर भाषा की अपनी ध्वनि व्यवस्था होती है लेकिन स्वर–व्यंजन सबमें होते हैं जो एक निश्चित क्रम में भाषा में प्रयुक्त होते हैं। अधिकतर भाषाओं में शब्द के आरंभ में स्वर से पहले अक्सर तीन से अधिक व्यंजन ध्वनियाँ नहीं आती।
- भाषा के मानकीकरण की परम्परागत प्रक्रिया सामाजिक शोषण की प्रक्रिया से जुड़ी हुई है क्योंकि यह पूरी प्रक्रिया 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली कहावत पर आधारित होती है।
- हर बच्चा भाषा का एक सार्वभौमिक स्वरूप लेकर पैदा होता है। बच्चों में भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता होती है और वे बिना किसी औपचारिक शिक्षण के स्वाभाविक रूप से अपने आसपास की भाषा सीख लेते है। उन्हें बस ज़रूरत होती है एक अनुकूल एवं उपयुक्त भाषाई माहौल की।

टिप्पणी

- बच्चा केवल भाषागत प्रवीणता ही हासिल नहीं करता बल्कि समाज के विभिन्न सामाजिक संदर्भों में उनके प्रयोग की दक्षता भी हासिल कर लेता है।
- कलात्मक उपकरणों के प्रयोग के कारण साहित्य की भाषा और आम बोलचाल की भाषा में अंतर होता है।
- भाषा में प्रवीणता का आकलन एवं मूल्यांकन सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना इन चारों कौशलों की समग्रता में होना चाहिये।

1.10 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

Agnihotri, R. K. (2007). *Hindi: An Essential Grammar*. London: Routledge.

Srivastava, R.N. (1983). *Bhashaashaashtra ke suutradhaar*. Delhi: National Publishing House.

Vandyopadhyay, P. and Agnihotri, R.K. (2000). *Bhaashaa: bahubhaashitaa aur hindii*. Delhi: Shilalekh.

1.11 अंत्य इकाई अभ्यास

1. क्या भाषा और समाज एक दूसरे को प्रभावित करते हैं? उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।
2. बहुभाषिता से आप क्या समझते हैं? क्या आप बहुभाषी हैं?
3. भाषा ध्वनि, शब्द, वाक्य, संवाद व विचार के स्तर पर नियमबद्ध है। कुछ उदाहरण देकर इसे स्पष्ट कीजिए।
4. हिन्दी के कुछ शब्द समूहों में 'ई' लगाने से वे शब्द संज्ञा से विशेषण बन जाते हैं। जैसे– सरकार–सरकारी, अपराध–अपराधी। इसी तरह संज्ञा से विशेषण बनाने के कुछ और नियम बताइए।
5. भाषा के मानकीकरण के क्या–क्या चरण हैं? विस्तार से समझाइए।
6. व्यक्ति, स्थान, समय और विषय के अनुसार भाषा कैसे बदलती है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
7. साहित्य की भाषा और आम बोलचाल की भाषा में क्या अंतर है?
8. भाषा में प्रवीणता हासिल करने में आयु एवं परिवेश की क्या भूमिका है?

प्रदत्त कार्य (Assignment)

- अक्सर घर की भाषा व स्कूल की भाषा अलग–अलग होने से भाषा सीखने में बच्चों को समस्याएँ आती हैं? आप बच्चों का अवलोकन कर समस्याओं की सूची बनाइए।
- क्या आपको लगता है कि जो बच्चे स्कूली भाषा से मिलती–जुलती भाषा ही घर पर सीखते हैं उनको भी सीखने की प्रक्रिया में वैसी ही समस्याएँ आती होंगी? अवलोकन करें और लिखें।
- 'चार वर्ष की बच्ची भाषा की दृष्टि से एक वयस्क बन जाती है।' इस बात को सिद्ध करने के लिए चार वर्ष की एक बच्ची से बातचीत कीजिए। वह जो वाक्य बोलती है उनका व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए।

टिप्पणी

इकाई 2 भारतीय भाषाएँ

संरचना

2.0 परिचय

2.1 अधिगम उद्देश्य

2.2 भारत में बहुभाषिकता

2.2.1 भारत का बहुभाषिक परिदृश्य

2.2.2 भारत के विभिन्न भाषा परिवार व भारत एक भाषाई क्षेत्र

2.3 भाषाओं के बारे में संविधान क्या कहता है?

2.4 भारतीय भाषा श्रेणियाँ

2.4.1 अनुसूचित भाषाएँ

2.4.2 प्रादेशिक भाषाएँ व मातृभाषा

2.4.3 शास्त्रीय भाषाएँ

2.4.4 बोली व भाषा में फ़र्क

2.5 भारत में हिन्दी भाषा का स्थान

2.6 भारत में अंग्रेजी भाषा का स्थान

2.7 भारत में भाषा–शिक्षा नीति

- *आयोगों व समितियों की अनुशंसाएँ*
- *त्रिभाषा–सूत्र*
- ***NCF** 2005 का दृष्टिकोण*

2.8 सारांश

2.9 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.10 अंत्य इकाई अभ्यास

2.0 परिचय

एक गाना तो आप ने सुना ही होगा–

> **"अंग्रेजी में कहते हैं– आई लव यू।**
> **गुजराती मा बोले तने प्रेम करूँ छू।**

टिप्पणी

बंगाली में कहते हैं– अमी तुमाके भालो बासी।
और पंजाबी में कहते हैं– तेरे बिन मर जावाँ, मैं तेनू प्यार करना, तैरे जैयो नैयो लबनाकृ''

यह गाना हमें भारत के बहुभाषिक परिदृश्य की झलक भर तो देता ही है। कभी आपने सोचा है भारत में कितनी भाषाएँ होंगी? 15–20 तो आप गिन ही चुके होंगे। लेकिन ये भी काफी नहीं हैं। यह सूची तो बहुत लम्बी है और यह कई छोटी सूचियों से मिलकर बनी है। इस इकाई में हम भारत की विभिन्न भाषाओं व इसकी बहुभाषिक संस्कृति का विस्तार से अध्ययन करने वाले हैं।

माना जाता है कि विश्व में लगभग पाँच हजार भाषाएँ बोली जाती हैं और उनमें से करीब एक तिहाई भारत में बोली जाती हैं। यानी करीब 1600 भाषाएँ यहाँ बोली जाती हैं। 19वीं व 20वीं शताब्दी तक इस भाषाई विविधता को एक समस्या के रूप में देखा जाता रहा है और उससे निपटने की कोशिशें भी होती रही हैं। लेकिन इसी भाषाई विविधता को पिछले कुछ वर्षों से एक संपदा माना जाने लगा है और समाज व स्वयं भाषा के विकास के लिए इस संपदा के इस्तेमाल की कोशिशें होने लगी हैं। आगे हम इस मुद्दे पर और अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे।

इसके साथ ही हम भारत की भाषा नीति के बारे में भी बात करेंगे। प्रशासन, शिक्षा, न्यायिक कार्यों, आपसी संवाद और संसद आदि में भाषा के संबंध में हमारी क्या नीति है, इसकी चर्चा करेंगे। समय–समय पर बनी भाषा शिक्षा नीतियों को भी समझने का प्रयास करेंगे और संवैधानिक प्रावधानों पर भी विचार करेंगे।

वैसे तो भारत एक बहुभाषिक देश है फिर भी राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में दो भाषाओं– हिन्दी व अंग्रेजी का मुख्य स्थान है। अतः वर्तमान व ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में इन दोनों भाषाओं के स्थान व स्थिति को समझना आवश्यक है। इस मुद्दे पर भी हम विस्तार से बात करेंगे।

2.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- भारत की भाषाई विविधता या भाषिक सम्पन्नता को समझ पाएँगे;
- भारत की बहुभाषिकता का विश्लेषण कर पाएँगे;
- भारत को एक भाषाई क्षेत्र के रूप में देख पाएँगे;
- विभिन्न भाषा–श्रेणियों जैसे– अनुसूचित भाषाएँ, मातृभाषाएँ, शास्त्रीय भाषाएँ, बोलियों आदि से परिचित हो पाएँगे;
- समय–समय पर बनी शिक्षा–नीतियों में निहित भाषाई समझ और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अंग्रेजी व हिन्दी की ऐतिहासिक यात्रा व वर्त्तमान स्थिति को स्पष्ट कर पाएँगे।

टिप्पणी

2.2 भारत में बहुभाषिकता

2.2.1 भारत का बहुभाषिक परिदृश्य

'विविधता में एकता' यह उद्धरण आपने कई बार सुना होगा। भारत के सन्दर्भ में यह वाक्यांश एकदम सटीक है। यहाँ कई तरह की विविधताएँ हैं जैसे– खान–पान, वेशभूषा, धर्म–व्यवहार, रीति–रिवाज संबंधी। वैसे इस तरह की विविधताएँ कमोबेश अधिकांश जगहों पर मिल जाएँगी। लेकिन भारत की भाषाई विविधता इन सबमें प्रमुख है। भारत में लगभग 1600 भाषाएँ बोली जाती हैं। ये भाषाएँ चार भिन्न भाषा परिवारों से संबंधित हैं। इस भाषिक बहुलता के कारण ही भारत एक बहुभाषिक प्रदेश है। बहुभाषिकता यहाँ का औसत मिजाज है। बहुभाषिकता का एक समग्र लेखा हमें 1961 की भाषाई गिनती में भी मिलता है। इस गणना में कुल 1652 मातृभाषाएँ गिनी गई हैं जिन्हें 193 भाषाओं के अन्तर्गत वर्गीकृत किया गया है। हमारा देश कई मायनों में बहुभाषी है। बहुभाषिकता का एक आयाम यह है कि हमारे संविधान की आठवीं सूची में आज 22 भाषाएँ दर्ज हैं। पहले इस सूची में केवल 14 भाषाएँ थीं। 14 से 22 होना भी हमारी बहुभाषिकता की एक सशक्त पहचान है। बहुभाषिकता का एक और आयाम यह है कि हमारे यहाँ अखबार, फिल्में, किताबें, टी.वी., रेडियो, शिक्षा, दफ्तर, कचहरी आदि का कामकाज कई भाषाओं में एक साथ होता है। इस तरह से भारतीय बहुभाषिकता के कई आयाम हैं।

अधिकांश पश्चिमी देश जो स्वयं को एकभाषी देश समझते हैं इस तरह की भाषाई विविधता को एक समस्या के रूप से देखते हैं और इसे पिछड़ेपन की निशानी समझते हैं। लेकिन बहुभाषी होना व्यक्तिगत या सामाजिक स्तर पर भारत के लिए समस्या का विषय नहीं है बल्कि यह हमारे लिए एक संसाधन का काम करता है। और, हमारी सांस्कृतिक सम्पन्नता को दर्शाता है। बहुभाषिकता इस अर्थ में भी संसाधन है कि जिनको एक से अधिक भाषाएँ आती हैं उनकी भाषा की प्रवीणता तो निःसन्देह बढ़िया होती ही है, समाज के प्रति उनका नजरिया भी स्पष्ट एवं उदार होता है। बहुभाशिकता का भाशाई प्रवीणता, स्कूली उपलब्धि, संज्ञानात्मक लचीलेपन और सामाजिक सहिश्णुता के साथ बहुत नजदीकी सहसंबंध है।''

बहुभाषिकता भारत के लिए कोई समस्या न होकर एक संपदा है। आप किसी गांव के विद्यालय में पढाते हैं या शहर के आपको आपकी कक्षा में ऐसे विद्यार्थी निश्चित तौर पर मिलेंगे जो एक से अधिक भाषाएं जानते और बोलते होंगे। उदाहरण के तौर पर यदि आप दिल्ली के विद्यालय में पढ़ाते हैं तो आपका कोई विद्यार्थी अपने माता पिता से घर में पंजाबी में अपने दोस्तों से हिन्दी में और कक्षा में अंग्रेजी बोलेगा क्योंकि उसकी मातृभाषा पंजाबी होगी। परन्तु जिस समाज में वो रहता है उसकी भाषा हिन्दी और शिक्षण का माध्यम अंग्रेजी हैं। इसी प्रकार यदि आप झारखंड के गुमला के किसी विद्यालय में पढ़ाएंगे तो आपके कक्षा का कोई उड़ांव विद्यार्थी अपने माता–पिता से घर में तो उड़ांव में दोस्तों से पंचपरगतियां में और कक्षा में हिन्दी में बात करेगा।

टिप्पणी

इकाई 1 में इस बात की चर्चा की जा चुकी हैं कि यदि बच्चे कम उम्र में इन भाषाओं से परिचित हो जाते हैं तो वे इन सभी भाषाओं में अधिकार के साथ बात–चीत कर सकेंगे। यदि बच्चे शिक्षण की भाषा विद्यालय में आने के बाद पहली बार सीखेंगे तो उन्हें थोड़ी परेशानी होगी क्योंकि उनकी उम्र पांच या छः वर्ष होगी और जैसा कहा जा चुका है चार वर्ष की आयु तक बच्चा अपने आस–पास की भाषा अच्छी तरह सीख लेता है। परन्तु आपको यह समझना जरुरी है कि एक सामान्य भारतीय बच्चा बहुभाषी होता है और कई बार वो इन भाषाओं की ध्वनियां एवं शब्द भी आपस में मिला देता है। यह स्वाभाविक है अतः इससे आप नाराज न हों परन्तु स्वाभाविक तरीके से बोलने दें। समय के साथ वो समझ जाएगा और ठीक कर लेगा। इससे बच्चे की बात समझने में आपको या दूसरों को कोई कठिनाई नहीं होगी। उपर की चर्चा से स्पष्ट है कि हमारी भाषाई विविधता हमारे लिए कोई समस्या नहीं है और न ही हमारे पिछड़ेपन की निशानी, बल्कि यह हमारी भाषाई समृद्धि का सबूत है।

किसी देश के बहुभाषी होने या एकभाषी होने में उसकी संस्कृति तथा भाषाओं के प्रति उसकी मानसिकता की भी मुख्य भूमिका होती है। अमेरिका मुख्यतः विभिन्न महाद्वीपों से आए हुए अप्रवासियों का देश है लेकिन फिर भी वह अपने आपको एकभाषी देश समझता है। अमेरिकी संविधान यह कहता है कि उसी व्यक्ति को अमेरिकी नागरिकता दी जाएगी जो अंग्रेजी भाषा जानता है। साथ ही गैर अंग्रेजी भाषाएँ पढ़ाने की भी वहाँ माकूल व्यवस्थाएँ नहीं हैं। इन्हीं सब कारणों से अप्रवासी अमेरिकी तीसरी पीढ़ी तक आते–आते अपनी मातृभाषाएँ भूलने लगते हैं। लेकिन भाषा के संदर्भ में भारत की स्थिति अमेरिका से बिल्कुल भिन्न है। देश के बँटवारे के पश्चात पाकिस्तान से सिंधी भाषा–भाषी भारत आए व 2001 की गणना के अनुसार आज भी भारत में 2,535,485 सिंधी भाषी हैं। इसी तरह तिब्बती लोग भी अप्रवासी हैं फिर भी 2001 की गणना के अनुसार 77,305 तिब्बती भारतीय नागरिक होकर तिब्बती भाषा का प्रयोग करते हैं। उसी प्रकार 10,504 भारतीय फारसी भाषी, 1106 भारतीय पश्तोभाषी, 51,728 भारतीय अरबी भाषी है। पांडिचेरी में रहने वाले 2,593 भारतीय अपनी मातृभाषा फ्रेंच बताते हैं। इसी तरह बर्मी, अर्मेनियन, हिब्रु, लाओशियन आदि भाषाओं को बोलने वाले भी कुछ संख्या में हैं और ये सभी भाषाएँ बोलने वाले अधिकांश लोग कम से कम द्विभाषी हैं।

लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत में भी अब कई भाषाएँ लुप्त होने के कगार पर हैं और कई आदिवासी भाषाओं को बोलने वाले सीमित होते जा रहे है। जैसे पांडिचेरी की एक आदिवासी भाषा को बोलने वाले लोग 100 से भी कम बचे हैं। 2001 से लेकर 2011 तक की गणना में भी कई भाषाओं को बोलने वालों की संख्या में कमी आई है।

हमने देखा कि भाषाई विविधता या बहुभाषिकता को बनाए रखने में भाषा के प्रति हमारा दृष्टिकोण बहुत मायने रखता है। शिक्षक होने के नाते इस विषय में आपका दृष्टिकोण बहुत मतलब रखता है क्योंकि आप यदि विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करेंगे तो ही बच्चें सभी भाषाओं का उपयोग करेंगे और अपनी भाषाओं को जीवित रखेंगे। यदि आप और हम भाषाओं के प्रति उदार रुख अपनाते हैं तो आसपास की सभी भाषाओं को जीवित रहने व पनपने में

सहयोग मिलता है, इसके विपरीत दूसरी भाषाओं के प्रति विमोह या संकुचित सोच आपसी झगड़े का कारण बनती है। भारत में भी हमें अलग–अलग स्थानों पर समय–समय पर भाषाई उदारता व भाषाई संकीर्णता के उदाहरण देखने को मिलते हैं जैसेः–

नागा समुदाय की 21 उपजातियों के लोग लगभग इतनी ही भाषाओं का उपयोग अपनी जाति के लोगों से संवाद के लिए करते हैं लेकिन एक उपजाति के लोग दूसरी उपजाति के लोगों से संवाद के लिए नागामिज भाषा का उपयोग करते हैं तथा बाहर के व्यक्ति (नागालैण्ड, मणिपुर से बाहर) से सम्पर्क के लिए हिन्दी या अंग्रेजी का उपयोग। यह नागा समुदाय की भाषाई उदारता है कि वे किसी एक भाषा के संकीर्ण दायरे में नहीं बँधे हैं और यही उदारता उन्हें बहुभाषी बनाती है जबकि गोवा में भाषा के नाम पर कोंकणी व मराठी में विवाद उठ खड़ा हुआ था। इसी तरह कर्नाटक राज्य के बेलगाँव में कन्नड़भाषियों व मराठी–भाषियों का झगड़ा होता रहा है। हम शिक्षकों का न सिर्फ भाषा शिक्षण में परन्तु भाषा सहिष्णुता बढ़ानें में बहुत योगदान हो सकता है। भाषा के विषय में हम समझ कर बच्चों को न सिर्फ एक दूसरे की भाषा सीखने को प्रोत्साहित कर सकते है परन्तु भाषा सीखने के माध्यम से बहुआयामी बना सकते हैं। भारतीय परिपेक्ष में यह बहुत आवश्यक है विशेष कर प्राथमिक कक्षाओं में।

अब तक हम बात कर चुके हैं कि भारत एक बहुभाषिक परिदृश्य वाला देश है और यह बहुभाषिकता कोई समस्या न होकर हमारी एक विशिष्ट संपदा है। भाषाई उदारता इस संपदा को बनाए रखने में मददगार होती है जबकि भाषाई संकीर्णता इस संपदा को नुकसान पहुँचाती है। अतः हम सभी को विशेष तौर पर हम शिक्षकों को सभी भाषाओं के प्रति स्वस्थ और सकारात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए।

2.2.2 भारत में विभिन्न भाषा परिवार एवं भारत एक भाषाई क्षेत्र

हम देख चुके हैं कि भारत में भाषाओं की बहुलता है। इनमें से कुछ भाषाओं में समानता है, सहअस्तित्व है तो कुछ भाषाओं में असमानता भी है। सामान्यतः समान गुण–धर्म वाली भाषाएँ किसी एक भाषा परिवार के अंतर्गत आती हैं या यूँ कहें कि समान प्रकृति वाली भाषाएँ मिलकर एक भाषा परिवार का निर्माण करती हैं।

भारत भाषाई विभिन्नता के दृष्टिकोण से तो असाधारण है ही, भाषा परिवारों की विभिन्नता के दृष्टिकोण से भी अद्भुत है। भारत में मुख्यतः चार प्रकार के भाषा परिवार हैं–

1. आर्य भाषा परिवार (इंडोआर्यन),
2. द्रविड़ भाषा परिवार (द्रविड़ियन),
3. तिब्बतो–बर्मन भाषा परिवार,
4. ऑस्ट्रो–एशियाटिक या मुंडा भाषा परिवार।

इन भाषा परिवारों की मुख्य भाषाएँ कुछ इस तरह हैं–

टिप्पणी

आर्य भाषा परिवार – हिन्दी, उर्दू, बांग्ला, असमिया (उच्चारण अख़मिया करते हैं), संस्कृत, पंजाबी, गुजराती, मराठी, कोंकणी, नेपाली, उड़िया, कश्मीरी आदि।

द्रविड़ भाषा परिवार – तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, कुडुख आदि।

तिब्बतो–बर्मन – मणिपुरी, अंगामी, बोडो, गारो, त्रिपुरी, ताग्सा, मिज़ो आदि।

मुंडा परिवार – मुंडा, मुंडारी, हो, संथाली, गुत, सवरा आदि।

एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु यह भी है कि इतनी भाषाई विभिन्नता व भाषा परिवारों की विभिन्नता होते हुए भी भारत एक भाषाई क्षेत्र है।

गौरतलब है कि उपर्युक्त चारों भाषा–परिवारों के अंतर्गत आने वाली भाषाएँ बोलने वाले लोग हजारों वर्षों से साथ रहते आए हैं इसलिए इन भाषाओं में आपसी आदान प्रदान बहुत हुआ है और इस आदान प्रदान से इन भाषाओं में संरचना के स्तर पर तमाम तरह की समानताएँ विकसित हुई हैं। इस आपसी आदान प्रदान के कुछ उदाहरण हम देखेंगे।

1. प्रतिध्वनि शब्द – सभी भारतीय भाषाओं में प्रतिध्वनि शब्दों का प्रयोग होता है। प्रतिध्वनि शब्दों में दूसरा शब्द 'अतिरिक्त' के अर्थ में आता है लेकिन अपने आप में निरर्थक होता है। जैसे– हिन्दी में 'चाय–वाय' कहते है तो 'वाय' का अर्थ है चाय के साथ कुछ और/अतिरिक्त चीज़ें। लेकिन 'वाय' का अर्थ की दृष्टि से स्वतंत्र कोई अस्तित्व नहीं है।

हिन्दी	खाना–वाना	तेलुगु	दूलि–गिली
	पानी–वानी		बाघ–वाघ
	चाय–वाय		अन्नय–गिन्नय
उड़िया	बाघौ–फागौ		
	चौबुलै–फाबुलै		
	चावल–वावल		

2. पुनरुक्त शब्द– सभी भारतीय भाषाओं में संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण को पुनरुक्त (एक ही शब्द की दो बार आवृत्ति) किया जा सकता है। पुनरुक्त शब्द 'प्रत्येक' के अर्थ में आता है। जैसे– 'घर–घर' का मतलब दो घर से नहीं बल्कि प्रत्येक घर से है।

संज्ञा	हिन्दी	उड़िया	तेलुगु
	घर–घर	घौरे–घौरे	इष्टि–इष्टि लो
	पन्ना–पन्ना	पृष्ठा–पृष्ठा	पेजि–पेजि
क्रियाविशेषण	धीरे–धीरे	धीरे–धीरे	नेम्मदि–नेम्मदि गा
	आहिस्ते–आहिस्ते	आस्ते–आस्ते	मेल्ला–मेल्ला गा
सर्वनाम	अपना–अपना	निजौ–निजौ	तना–तना

3. पद के स्तर पर– सभी भारतीय भाषाओं में कारक चिह्न या संबंध सूचक शब्द मूल शब्द के बाद ही आते हैं। जैसे–

हिन्दी–राम का, घर में   तमिल– रामोड (राम का), रामक्कु (राम को)

मुण्डारी– होड़ा रे (घर में)

4. ध्वनि के स्तर पर– सभी भारतीय भाषाओं में किसी भी मूल शब्द का आरम्भ ञ, ण, ङ, नासिक्य ध्वनियों से नहीं होता।

पाठगत प्रश्न

1. भारत में कितने भाषा परिवार हैं?

   (क) तीन   (ख) चार

   (ग) पाँच   (घ) छह

2. विभिन्न भाषाओं के आपसी आदान–प्रदान से कौनसे भाषावैज्ञानिक लक्षणों का प्रादुर्भाव हुआ?

   ....

   ....

   ....

3. आपके विद्यार्थियों की मातृभाषा के तीन–तीन पुनरुक्त शब्द पूछ कर लिखें

   ....

   ....

   ....

2.3 भाषाओं के बारे में संविधान क्या कहता है?

संविधान निर्माताओं ने भाषा के मसले को महत्त्वपूर्ण मानते हुए गंभीर विचार–विमर्श के बाद संविधान के भाग–17 में भाषा संबंधी प्रावधानों को रखा। परिशिष्ट में इन प्रावधानों को आप विस्तार से पढ़ सकते हैं। भारत के बहुभाषिक परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने केवल एक या दो भाषाओं को प्रमुखता न देते हुए कई भाषाओं को संविधान में जगह दी। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी 'हिन्दी' को संघ (भारत) की राजभाषा व अंग्रेजी को सह–राजभाषा का दर्जा दिया गया। अंग्रेजी को यह दर्जा शुरुआत में 15 वर्षों तक दिया गया था हालाँकि 1963 के Official Languages Act के माध्यम से अंग्रेजी को हमेशा के लिए सह–राजभाषा का दर्जा दे दिया गया। अनुच्छेद 345 के अनुसार राज्यों को अधिकृत किया गया कि वे विधि द्वारा उस राज्य में प्रयोग होने

टिप्पणी

वाली भाषाओं में से एक या अधिक अथवा हिन्दी को राज्य की राजभाषा बनाएँ। अनुच्छेद 345 की पृष्ठभूमि में उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली राज्यों की राजभाषा हिन्दी घोषित की गई। पंजाब में पंजाबी, महाराष्ट्र में मराठी तथा गुजरात में हिन्दी व गुजराती भाषा को राजभाषा घोषित किया गया। तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, केरल, उड़ीसा, असम और पश्चिम बंगाल ने क्रमशः तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, असमिया और बांग्ला को अपनी–अपनी राजभाषा बनाया। सिक्किम ने नेपाली, लेपचा, लिंबू और भूटिया को अपनी राजभाषाएँ घोषित किया। नागालैण्ड ने अंग्रेजी को अपनी राजभाषा बनाया। इसी तरह अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम तथा मेघायल ने किसी भाषा को राजभाषा नहीं बनाया लेकिन सरकारी कामकाज अंग्रेजी में चल रहा है। केन्द्र शासित प्रदेशों– चंडीगढ़, अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह और दादरा नागर हवेली पर केन्द्रीय राजभाषा नीति लागू होती है लेकिन पांडिचेरी की राजभाषा तमिल है।

एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा राष्ट्रभाषा का भी है। हम सभी लोग हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानते हैं लेकिन ध्यान रहे संविधान ने कहीं भी राष्ट्रभाषा के बारे में कुछ नहीं कहा है। अनुच्छेद 351 में हिन्दी के प्रचार–प्रसार व विकास की बातें जरूर की गई हैं।

पाठगत प्रश्न

1. संविधान के किस भाग में भाषा संबंधी प्रावधानों को रखा गया है?

   (क) सत्रह (ख) अठारह

   (ग) उन्नीस (घ) बीस

2. किस अधिनियम के तहत अंग्रेजी को हमेशा के लिए सह–राजभाषा का दर्जा दिया गया?

   ....

   ....

   ....

2.4 भारतीय भाषा श्रेणियाँ

किसी भी देश में कई भाषाएं बोली एवं लिखी जाती हैं परन्तु सभी भाषाओं का एक जैसा स्थान नहीं होता है। जो लोग इन भाषाओं के अन्तर को नहीं समझते वे अपने अनुभव के आधार पर धारणाएं बना लेते हैं। भाषा न सिर्फ व्यक्ति के परन्तु समाज और देश के विकास में भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इन अन्तरों को समझना अत्यावश्यक है ताकि आप अपने विद्यार्थियों को भी बता सकें और उन्हें भाषा के नाम पर कोई बाँट न सके। इस खंड में हम भाषाओं की श्रेणियों की चर्चा करेंगे।

टिप्पणी

2.4.1 अनुसूचित भाषाएँ

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएँ अनुसूचित भाषाएँ कहलाती हैं। आठवीं अनुसूची में 1950 में 14 भाषाओं को शामिल किया गया है। ये 14 भाषाएँ हैं– असमिया, बांग्ला, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, तमिल, तेलुगु और उर्दू। इस सूची में इक्कीसवें संविधान संशोधन (1967) द्वारा सिंधी भाषा को जोड़ा गया। इसी तरह इकहत्तरवें संविधान संशोधन (1992) द्वारा कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली तथा बानवेवां संविधान संशोधन (2003) द्वारा बोडो, संथाली, मैथिली और डोगरी भाषाओं को भी अनुसूचित भाषाओं का दर्जा दिया गया। इस तरह वर्त्तमान में संविधान में कुल 22 भाषाएँ अनुसूचित भाषाओं के रूप में सूचित (listed) हैं। इसके अतिरिक्त कई राज्य अपनी भाषाओं को अनुसूचित भाषा का दर्जा दिलाने की कोशिश कर रहे हैं। किसी भी भाषा का अनुसूचित सूचि में आने का अर्थ है कि उस भाषा के विकास के लिए संघ और राज्य सरकार प्रयास करेंगे। इन भाषाओं में शिक्षण हो सकता है तथा इनके विकास के दूसरे प्रयास भी किए जाते हैं। हालाकि गैर–सूचि की भाषाओं में भी पठन–पाठन का काम होता है। यह निर्णय राज्य सरकारों का होता है। आपका मुख्य उद्‌देश्य भाषा शिक्षण होगा परन्तु यदि आप अपने विधार्थियों को भारतीय भाषाओं के विषय में जानकारी देंगे तो वे दूसरी भाषा बोलने वाले सहपाठियों को 'गैर' नहीं मानेंगे परन्तु विभिन्न भाषा भाषी होने को स्वाभाविक मानेंगे। इससे आपकी कक्षा और विद्यालय का माहौल ज्यादा मित्रवत बनेगा। इस प्रकार बच्चों में आपसी भाईचारा और देश प्रेम बढेगा जो शिक्षा का भी एक उद्‌देश्य है।

2.4.2 प्रादेशिक भाषाएँ व मातृभाषा

भारतीय भाषाओं के वर्गीकरण का एक और समूह है, प्रादेशिक भाषाएँ व मातृभाषाएँ। 2001 की गणना में कुल 100 प्रादेशिक भाषाओं की सूची तैयार की गई है एवं इनमें से अधिकांश भाषाएँ स्वतंत्र व अकेली नहीं हैं, इन प्रत्येक के अन्तर्गत कई सारी मातृभाषाएँ या बोलियाँ शामिल हैं। प्रादेशिक भाषा का यह समूह विभिन्न मातृभाषाओं को मिलाकर बनाया गया है। 1961 की भाषाई गणना में भारत में कुल 1652 मातृभाषाएँ गिनी गई हैं। मातृभाषा का अर्थ सामान्यतः घर में बोली जाने वाली भाषा से लिया जाता है। 2001 की जनगणना में जनगणना विभाग ने मातृभाषा को कुछ इस तरह परिभाषित किया है– ''मातृभाषा वह भाषा है जिसमें कि किसी व्यक्ति की माँ उससे बचपन में बात करती है। यदि माँ नहीं है तो घर में बोली जाने वाली भाषा मातृभाषा होगी। यदि फिर भी कोई संदेह है तो मुख्यतः परिवार में बोली जाने वाली भाषा मातृभाषा मानी जाएगी'' (मल्लिकार्जुन–8)।

एक ही परिवार में रहने वाले दो लोगों की मातृभाषाएँ अलग–अलग भी हो सकती हैं यदि पति किसी और समुदाय, क्षेत्र का है एवं पत्नी किसी और समुदाय, क्षेत्र की है तो दोनों की मातृभाषाएँ भी अलग होंगी। इसी में एक और महत्त्वपूर्ण बिन्दु ध्यान देने योग्य है कि किसी बच्चे की एक से अधिक मातृभाषाएँ हो सकती हैं यदि घर में एक से अधिक भाषाओं का एक साथ, एक समान प्रयोग हो रहा है। आप अपने विद्यार्थियों के साथ चर्चा कर उन्हें भी मातृभाषा के विषय में जागरुक बना सकते हैं।

टिप्पणी

2.4.3 शास्त्रीय भाषाएँ

शास्त्रीय भाषाएँ वो होती हैं जिनका एक लम्बा इतिहास हो, स्वतंत्र व्याकरणिक परम्परा हो तथा मौलिक साहित्य भंडार हो।

भारत सरकार ने किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा मानने व घोषित करने के निम्नलिखित मापदंड तय किए हैं–

1. उस भाषा का 1500 से 2000 वर्ष पुराना लिखित इतिहास/लिखित ग्रंथ हो।
2. उसका एक प्राचीन साहित्य/ग्रंथ हो, जिसे कि उस भाषा को बोलने वाले एक बहुमूल्य विरासत मानते हों।
3. उस भाषा की साहित्य परम्परा मौलिक हो न कि किसी अन्य भाषिक समुदाय से उधार ली हुई हो।

जून 2004 में तमिल भाषा को शास्त्रीय भाषा घोषित किया गया। 2005 में संस्कृत को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया तथा 2008 में कन्नड़ व तेलुगु को भी शास्त्रीय भाषाएँ घोषित किया गया।

2.4.4 बोली व भाषा में फ़र्क

अभी तक हमने दो शब्दों का बहुत बार प्रयोग किया है– 'भाषा' व 'बोली'। कुछ को हमने भाषा कहा है और कुछ को हमने बोली कहा है। क्या वास्तव में भाषा व बोली में कोई अन्तर होता है? सामान्यतः लोग भाषा व बोली को अलग–अलग मानते हैं और कारन पूछने पर कई कारन गिनवा देंगे जैसे– भाषा को ज्यादा लोग बोलते हैं व बोली को कम, भाषा का व्याकरण होता है बोली का नहीं, भाषा का साहित्य होता है बोली का नहीं, भाषा की लिपि होती है बोली की नहीं, आदि।

वास्तव में ये सभी कारन सही नहीं हैं। भाषाई दृष्टि से भाषा व बोली में कोई फ़र्क नहीं होता है। भाषा व बोली दोनों का व्याकरण होता है, अर्थात् दोनों नियमबद्ध हैं। जैसे हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं का व्याकरण है उसी तरह अवधी, ब्रज, भोजपुरी भी व्याकरणबद्ध हैं। इसी तरह साहित्य की बात भी है। जिस तरह भाषा कही जाने वाली हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत में साहित्य लिखा गया उसी तरह अवधी, मैथिली, ब्रज आदि जिन्हें बोलियाँ कहा जाता है, उनमें भी अपार साहित्य लिखा गया है। इसी तरह लिपि वाला कारन भी वाज़िब नहीं है क्योंकि संसार की कोई भी भाषा किसी भी लिपि में लिखी जा सकती है।

जैसे– श्याम खाता है। (देवनागरी)

Shyaam khaataa hai. (रोमन)

साफ़ है कि लिपि, साहित्य, व्याकरण आदि के आधार पर भाषा व बोली में कोई अंतर नहीं है। किसको भाषा कहा जाएगा और किसको बोली यह एक सामाजिक व राजनैतिक प्रश्न है। जैसा कि इकाई 1 मे भी कहा गया हैं सत्ताधारी व पैसेवाले लोग अक्सर जो बोली बोलते हैं, वह भाषा कहलाने लगती है। उसी के व्याकरण व शब्दकोष लिखे जाते हैं। उसी

में साहित्य लिखा जाता है। स्कूलों में शिक्षा का माध्यम बनकर वही बोली मानकीकृत भाषा बन बैठती है। उसी से मिलते–जुलते, बातचीत के अन्य तरीके उस भाषा की बोलियाँ कहलाने लगते हैं। हम शिक्षकों को यह भेद स्पष्ट होना चाहिये ताकि हम बच्चों की भाषा के आधार पर उनके बारे में धारणाएं न बना लें और जाने–आने कोई भेद–भाव न हो जाए।

कैसे सत्ता का केन्द्र बदलने पर भाषा का दर्जा बढ़ता–घटता है। जब राजनीति व सत्ता का केन्द्र कन्नौज था, तो साहित्य की शिष्ट भाषा थी 'अपभ्रंश'। खड़ी बोली, ब्रज, अवधी आदि का जो भी रूप रहा हो, उसकी बोलियाँ कहलाईं। इसी तरह जब राजनैतिक केन्द्र ब्रज–क्षेत्र बना तो शिष्ट साहित्य की भाषा 'ब्रज' हो गई और दिल्ली, मेरठ की खड़ी बोली उसकी बोली कहलाई। शासन व सत्ता का केन्द्र दिल्ली, मेरठ हुआ तो ब्रज, अवधी आदि हिन्दी की बोलियाँ कहलाने लगीं।

तो यही मुख्य बात है कि भाषा व राजनीति के संबंध को समझने की आवश्यकता है, यही तय करता है कि कौन भाषा कहलाएगी और कौन बोली।

पाठगत प्रश्न

1. संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्तमान में कितनी भाषाएँ शामिल हैं?

   (क) चौदह (ख) अठारह

   (ग) बीस (घ) बाईस

2. मातृभाशा से क्या तात्पर्य है?

   ....

   ....

   ....

3. किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा बनने के लिए क्या जरूरी है?

   ....

   ....

   ....

4. क्या भाषा व बोली में कोई अंतर है?

   ....

   ....

   ....

2.5 भारत में हिन्दी भाषा का स्थान

शब्दार्थ की दृष्टि से हिन्द या भारत में बोली जाने वाली भाषा हिन्दी कही जा सकती है। इसके प्राचीन नामों में हिन्दुई या हिन्दवी का भी यही अर्थ है।

ठेठ हिन्दी–यह भाषा का वह रूप है जिसमें अन्य बोलियों का समावेश नहीं होता। संस्कृत तथा अरबी–फारसी की शब्दावली से भी इसे मुक्त रखा जाता है।

खड़ी बोली– यह नाम तत्कालीन मानक (स्टैण्डर्ड) भाषा के लिए प्रयुक्त किया गया। खड़ीबोली, ब्रजभाषा और रेख़्ता दोनों से ही भिन्न एक बोलचाल की भाषा थी। वह गँवारू भाषा नहीं थी वरन् एक व्यावहारिक तथा परिनिष्ठित भाषा थी, जिसमें साहित्यिक ग्रन्थों की रचना भी संभव थी।

नागरी हिन्दी– साहित्यिक भाषा के रूप में प्रयुक्त हिन्दी भाषा को नागरी हिन्दी कहा गया।

हिन्दुस्तानी– इसमें हिन्दी तथा उर्दू दोनों रूप सम्मिलित हो जाते हैं। यह हिन्दी और उर्दू का मिश्रित रूप है।

मानक (परिनिष्ठित) भाषा– आम जनता की बोलियों में से जब कोई बोली शिक्षित लोगों या अन्य शिष्ट सामाजिक वर्ग की भाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो जाती है, तब वह मानक भाषा कही जाती है।

हिन्दी की मानक शैली तीन बड़े केन्द्रों– मेरठ, दिल्ली और आगरा की बोली पर आधारित है।

हिन्दी की बोलियों का विभाजन :

- पूर्वी खण्ड →
  - पूर्वी हिन्दी
    - अवधी
    - बघेली
    - छत्तीसगढ़ी
  - बिहारी हिन्दी
    - भोजपुरी
    - मगही
    - मैथिली
- पश्चिमी हिन्दी
  - आकार बहुला
    - कौरवी
    - हरियाणवी
    - दक्खिनी
  - ओकार बहुला
    - ब्रजभाषा
    - बुन्देली
    - कन्नौजी
- राजस्थानी हिन्दी
  - मारवाड़ी
  - जयपुरी
  - मेवाती
  - मालवी
- पहाड़ी हिन्दी
  - कुमायूँनी
  - गढ़वाली

इसके अतिरिक्त निमाड़ी, प. पहाड़ी, ढूँढाड़ी, हाड़ौती, अहीरवाटी आदि भी हिन्दी की बोलियाँ हैं।

आप फिर से देख रहे होंगे कि हिन्दी भाषा है और अवधी, ब्रज, मैथिली, राजस्थानी, भोजपुरी आदि बोलियों के रूप में इसमें शामिल हैं। आप यह ध्यान में रखें कि ये बोलियाँ भी अपने आपमें भाषाएँ हैं और एक समय में ये स्वतंत्र भाषाओं के रूप में ही मानी जाती रही हैं। राजनीतिक व आर्थिक कारणों से जब खड़ी बोली मजबूत बन गई तो इन भाषाओं का स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो गया और इन्हें हिन्दी की बोलियाँ बनने पर मजबूर होना पड़ा। डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव लिखते हैं– ''जातीय पुनर्गठन की सामाजिक प्रक्रिया के दौरान कोई 'बोली' व्यापार, राजनीति या संस्कृति के कारण अन्य जनपदीय बोलियों की तुलना में विशेष महत्त्व पा लेती है। जिसके परिणामस्वरूप वह अन्य बोलियों के बोलने वालों के बीच सम्पर्क–साधन का भी काम करने लगती है। बाद में अन्य बोलियों का प्रयोग करने वाले व्यक्ति भी इसी प्रतिष्ठित और सम्पर्क–साधन के रूप में प्रयुक्त बोली के साथ अपनी सामाजिक अस्मिता जोड़ लेते हैं। आज की स्थिति में 'खड़ी बोली' के पर्याय के रूप में मान्य हिन्दी तो 'भाषा' है, पर ब्रज, अवधी, भोजपुरी आदि मात्र उसकी बोलियाँ हैं।'' इसलिए आगे जहाँ भी हिन्दी की चर्चा की जाएगी ब्रज, अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी आदि को उसकी बोलियों के रूप में दर्शाया जाएगा लेकिन आप इस 'भाषा व बोली' की समझ को अपने जेहन में रखें जिसकी चर्चा हमने अभी व पहले की है।

साहित्यिक भाषा के रूप में हिन्दी:

ब्रजभाषा, मैथिली और अवधी हिन्दी की प्रमुख साहित्यिक भाषाएँ हैं। ब्रजभाषा का साहित्य बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक तेजी से लिखा जाता रहा और अब भी यह काफ़ी बड़े भू–भाग की जीवन्त भाषा है। मध्यकाल में सूरदास, मीराबाई, केशवदास, रहीम, रसखान, बिहारी, देव, घनानन्द, सेनापति, भूषण, पद्माकर, रत्नाकर जैसे कवियों ने इसको समृद्ध किया।

मैथिली के प्रख्यात कवि विद्यापति को भारत के लगभग पूरे पूर्वांचल को एकसूत्र में बाँधने का श्रेय है। अवधी के विद्वान कवियों में जायसी और तुलसीदास हैं। जायसी की 'पद्मावत' ठेठ अवधी में लिखी महाकाव्यात्मक रचना है। तुलसीदास ने कुल बारह प्रामाणिक ग्रंथ लिखे हैं जिनमें प्रमुख हैं– 'रामचरितमानस', 'कवितावली', 'गीतावली', 'विनयपत्रिका' आदि। गीतावली, विनयपत्रिका व कवितावली की भाषा ब्रजभाषा है। ब्रज और अवधी दोनों साहित्यिक भाषाओं पर महाकवि तुलसीदास का समान अधिकार था। संत साहित्य में हिन्दी को सम्पन्न तथा समृद्ध करने वाले कवियों में कबीर, दादू, रैदास, गुरु नानक आदि हैं।

आधुनिक काल में भारतेन्दु, महावीर प्रसाद द्विवेदी, बालकृष्ण भट्ट, प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी, अज्ञेय, रघुवीर सहाय तथा अन्य साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी को एक नया रूप दिया। उसे षक्ति एवं स्फूर्ति प्रदान की। इनके द्वारा रचित कविता, कहानी, नाटक, इतिहास, आलोचना, जीवनवृत्त, यात्रावृतांत्त, निबंध, डायरी, रिपोर्ताज आदि ने हिन्दी के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता ने भी हिन्दी के स्वरूप को स्थिर करने में अहम भूमिका निभायी। 1826 में कलकत्ता से प्रकाशित हिन्दी का पहला समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' तथा दूसरा पत्र 'बंगदूत' इस दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय है। हिन्दी पत्रकारिता के विकास में कलकत्ता तथा अहिन्दीभाषी बंगालियों का विशेष योगदान रहा।

प्रशासनिक भाषा के रूप में हिन्दी का विकास :

संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 के दिन हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि इससे पूर्व प्रादेशिक भाषा के रूप में हिन्दी का कोई अस्तित्व ही नहीं था। कई देशी रियासतों– ग्वालियर, जयपुर आदि में सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में ही किया जाता था। साथ ही भारत सरकार की राजभाषा अंग्रेजी होते हुए भी अंग्रेजों के लिए हिन्दी का ज्ञान आवश्यक था जिसका प्रारम्भ 1800 ई. में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के साथ ही हो गया था। 1878–79 में ही इंग्लैण्ड से भारत आने वाले प्रत्येक अधिकारी के लिए हिन्दी–हिन्दुस्तानी का ज्ञान अनिवार्य था। गांधीजी के प्रयत्नों से 1925 में कांग्रेस ने यह तय किया कि कांग्रेस की महासमिति का कामकाज आमतौर पर हिन्दुस्तानी में चलाया जाएगा।

वर्तमान स्थिति– हिन्दी केन्द्र सरकार की राजभाषा तो है ही कुछ राज्यों की भी राजभाषा है। आज यह सर्वविदित है कि जिन प्रदेशों की राजभाषा हिन्दी बनी है, वहाँ अधिकांश कामकाज हिन्दी में ही संचालित होता है। उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार और राजस्थान के उच्च न्यायालयों में हिन्दी में भी निर्णय दिए जाने और सब प्रकार के प्रलेख दाखिल किए जाने की पूरी छूट उपलब्ध है।

हिन्दी अनेक प्रदेशों में स्नातकोत्तर स्तर तक मानविकी, विज्ञान, विधि–शास्त्र आदि विषयों की शिक्षा का वैकल्पिक माध्यम है। कम्प्यूटर विज्ञान की पढ़ाई भी हिन्दी माध्यम से कराने के अनेक केन्द्र खुल गए हैं। सरकारी कार्यालयों में तो अब विभिन्न प्रकार के कार्य कम्प्यूटर से हिन्दी में होने लगे हैं।

अब 'हिन्दी' केन्द्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों और बैकों आदि की उच्चतम भर्ती परीक्षाओं का वैकल्पिक माध्यम है। हालाँकि उन भर्ती परीक्षाओं में अभी भी अंग्रेजी भाषा का अनिवार्य प्रश्न पत्र है, जिसके विकल्प में हिन्दी भाषा का प्रश्न पत्र नहीं रखा गया है। खैर, देश के आम लोगों के बीच तो हिन्दी काफ़ी हद तक संपर्क भाषा का माध्यम बनी ही हुई है।

पाठगत प्रश्न

1. जायसी की 'पद्मावत' किस भाषा में लिखी हुई है?

   (क) ब्रजभाशा (ख) अवधी

   (ग) मैथिली (घ) हिन्दी

2. हिन्दुस्तानी किन दो भाषाओं का मिश्रित रूप है?

   ....

   ....

   ....

3. 'हिन्दी केन्द्र की राजभाषा तो है ही, कुछ राज्यों की राजभाषा भी है।' उन राज्यों के नाम बताएँ।

   ....

   ....

   ....

4. साहित्यिक भाषा के रूप में हिन्दी की विकास–यात्रा को संक्षेप में समझाइये।

   ....

   ....

   ....

2.6 भारत में अंग्रेजी भाषा का स्थान

1813 में अंग्रेज, ईसाई मिशनरी भारत आए और उन्होंने प्राथमिक स्तर के स्कूल आरम्भ किए जिनमें शिक्षण का माध्यम स्थानीय भाषा थी। बाद में उन्होंने अंग्रेजी माध्यम के हाई स्कूल आरम्भ किए। 1857 के बाद अंग्रेज शासकों ने विश्वविद्यालय स्थापित किए। अंग्रेजी, भारतीय शिक्षा में प्रथम भाषा बन गई। अच्छी अंग्रेजी जानने वाले भारतीय, भारत के नव–आभिजात्य बन गए। अंग्रेजी माध्यम वाले बहुत से नए स्कूल खुल गए। विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षण का माध्यम अंग्रेजी था, इसलिए महत्त्वाकांक्षी भारतीयों द्वारा ऐसे स्कूलों को पसन्द किया गया, जहाँ अंग्रेजी पर जोर था।

स्वतंत्रता के बाद भी अंग्रेजी भारत की मुख्य भाषा बनी रही। सरकारी तौर पर इसे सहायक भाषा का दर्जा दिया गया। आज भी वे स्कूल जो अंग्रेजी पर जोर देते हैं, बेहतर स्कूल माने जाते हैं। यही स्थिति विश्वविद्यालय स्तर पर भी है। 1970 व 1980 के दशक में एक तिहाई भारतीय स्कूलों में अंग्रेजी प्रथम भाषा थी। आज भी अंग्रेजी भाषा भारत में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है, जिसके निम्नलिखित कारण हैं–

- अधिकतर संदर्भ–सामग्री और महत्त्वपूर्ण पुस्तकें अंग्रेजी में लिखी जाती हैं।
- अंग्रेजी, वाणिज्य एवं व्यवसाय में सहायक है।
- अंग्रेजी पर पूर्ण अधिकार एक विशिष्ट व्यक्तित्व की पहचान है।
- अंग्रेजी शिक्षा और शिक्षण के माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती है।
- विश्व में होने वाले वैज्ञानिक, तकनीकी, कृषि और व्यावसायिक विकास की जानकारी अंग्रेजी के माध्यम से होती है।
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह विश्व के अधिकतर देशों में बोली और समझी जाती है।
- हमारे राष्ट्रीय जीवन में अंग्रेजी भाषा का विशेष स्थान है। राज्यों की अपनी क्षेत्रीय भाषाएँ हैं, किन्तु परस्पर समझने और कार्य करने में अंग्रेजी सहायक है।

विद्यालय पाठ्यक्रम में अंग्रेजी भाषा का स्थान :

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने अंग्रेजी के महत्त्व पर जोर दिया। भारतीय शिक्षा आयोग (1964–66) ने भी उसके महत्त्व को स्वीकारा। इसने दसवीं तक **त्रिभाषा सूत्र** की अनुशंसा की जिसके अंतर्गत–

- प्रथम भाशा
  - स्कूल में पहली भाषा जो पढ़ाई जाए वह मातृभाषा हो या क्षेत्रीय भाषा हो।
- द्वितीय भाषा
  - हिंदी भाषी राज्यों में द्वितीय भाषा कोई भी अन्य आधुनिक भाषा या अंग्रेजी हो।
  - गैर हिंदी भाषी राज्यों में द्वितीय भाषा हिंदी या अंग्रेजी होगी।
- तृतीय भाषा
  - हिंदी भाषी राज्यों में तीसरी भाषा अंग्रेजी या कोई भी एक आधुनिक भारतीय भाषा होगी जो द्वितीय भाषा के रूप में न पढ़ी जा रही हो।
  - गैर हिंदी भाषी राज्यों में तीसरी भाषा अंग्रेजी होगी या एक आधुनिक भारतीय भाषा जो द्वितीय भाषा के रूप में न पढ़ी जा रही हो

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार, 'भारत के बहुभाषी समाज में अंग्रेजी एक वैश्विक भाषा है। अंग्रेजी शिक्षण का लक्ष्य ऐसे बहुभाषी लोगों को तैयार करना है जो हमारी भाषाओं को समृद्ध कर सकें। विभिन्न राज्यों में अन्य भारतीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी का स्थान बनाने की आवश्यकता है, जहाँ अन्य भाषाएँ अंग्रेजी सीखने–सिखाने को समृद्ध करें, वहीं अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में अंग्रेजी के वर्चस्व को कम करने के लिए अन्य भारतीय

भाषाओं के मूल्यवर्द्धन की जरूरत है। अंग्रेजी पढ़ाने वाले शिक्षकों की अंग्रेजी में बुनियादी दक्षता होनी चाहिए। कक्षा 10 में विद्यार्थियों की असफलता का एक मुख्य कारण अंग्रेजी है।

पाठगत प्रश्न

1. 1813 में अंग्रेज जब भारत आए तो उनके द्वारा आरंभ किए गए प्राथमिक स्तर के स्कूलों में शिक्षण का माध्यम था–

   (क) अंग्रेजी (ख) हिन्दी

   (ग) हिन्दुस्तानी (घ) स्थानीय भाषा

2. अंग्रेजी बेहतर शिक्षा, बेहतर संस्कृति और अधिक बुद्धिमता का प्रतीक है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? तर्क सहित अपने विचार की पुष्टि करें।

   ....

   ....

   ....

3. अंग्रेजी एक औपनिवेशिक भाषा होते हुए भी आज के स्वतंत्र भारत में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। क्यों?

   ....

   ....

   ....

2.7 भारत में भाषा–शिक्षा नीति

स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार और राज्य सरकारें राष्ट्रीय प्रगति और सुरक्षा के प्रभावी साधन के रूप में शिक्षा पर अधिकाधिक ध्यान देती रही हैं। विभिन्न आयोगों और समितियों द्वारा शैक्षिक पुनर्निर्माण हेतु प्रस्तुत सिफारिशों को जानना, भारत में भाषा शिक्षा सम्बन्धी नीति को समझने के लिए जरूरी है। **शिक्षा की राष्ट्रीय नीति 1968** में यह स्वीकार किया गया कि भारतीय भाषाओं और साहित्य का उत्साह के साथ विकास करना शैक्षिक तथा सांस्कृतिक विकास की एक अनिवार्य शर्त है। जब तक वह नहीं किया जाएगा लोगों की सृजनात्मक शक्तियाँ क्रियाशील नहीं होंगी, शिक्षा के स्तरों में सुधार नहीं आएगा, जनसाधारण तक ज्ञान नहीं पहुँचेगा और बुद्धिजीवियों तथा जनसाधारण के बीच की खाई कम नहीं होगी। प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में प्रादेशिक भाषाओं को पहले से ही शिक्षा के माध्यम के रूप में व्यवह्रत किया जा रहा है। इसमें यह भी कहा गया है कि माध्यमिक कक्षाओं में राज्य सरकारों को **त्रिभाषा सूत्र** लागू करना चाहिए। अर्थात् माध्यमिक स्तर पर बच्चे तीन भाषाएँ पढ़ें। ये तीन भाषाएँ कौन–सी होंगी, हमने उपर चर्चा किया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भाषाओं के विकास के सम्बन्ध में 1968 की नीति को और अधिक तेजी व सार्थकता के साथ कार्यान्वित करने की बात स्वीकार की गई।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की समीक्षा (राममूर्ति) समिति, 1990 की महत्त्वपूर्ण संस्तुतियों में एक है– ग्रामीण छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त करने की ओर प्रवृत्त नहीं हो पाते, इसका एक गंभीर कारण यह भी है कि आज भी अंग्रेजी भाषा का प्रभुत्व कायम है। इसलिए समय की माँग है कि शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षा के माध्यम के रूप में क्षेत्रीय भाषाओं को प्रोत्साहित किया जाए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार बच्चों में भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। ज्यादातर बच्चे, स्कूली शिक्षा की शुरुआत से पहले ही भाषा की जटिलताओं और नियमों को आत्मसात कर पूर्ण भाषिक क्षमता प्राप्त कर लेते हैं। कई बार जब बच्चे स्कूल आते हैं तो उनमें पहले से ही दो या तीन भाषाओं को समझने और बोलने की क्षमता होती है।

इस पाठ्यचर्या ने त्रिभाषा सूत्र को प्रभावी रूप से लागू करने का सुझाव दिया है जिसमें आदिवासी भाषाओं सहित बच्चों की मातृभाषाओं को शिक्षा के माध्यम के रूप में स्वीकृति देने पर जोर है। प्रत्येक बच्चे में बहुभाषिक प्रवीणता विकसित करने के लिए भारतीय समाज के बहुभाषिक चरित्र को एक संसाधन के रूप में देखना चाहिए जिसमें अंग्रेजी में प्रवीणता भी शामिल है। यह तभी मुमकिन है जब भाषा–शिक्षण का पूरा शिक्षाशास्त्र मातृभाषा के उपयोग पर आधारित हो।

द्विभाषिकता या बहुभाषिकता से निश्चित रूप से संज्ञानात्मक लाभ होते हैं। त्रिभाषा सूत्र भारत की भाषाई की चुनौतियों और अवसरों को संबोधित करने का एक प्रयास है। यह एक रणनीति है जिसके अंतर्गत कई भाषाएँ सीखने के मार्ग को प्रशस्त किया गया है।

पाठगत प्रश्न

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति कब लागू हुई?

   (क) 1968 (ख) 1986

   (ग) 1990 (घ) 1992

2. त्रिभाशा सूत्र क्या है?

   ....

   ....

   ....

3. शिक्षा की राष्ट्रीय नीति– 1968 में भारतीय भाषाओं और साहित्य के विकास की दिशा में दिए गए सुझावों से क्या लाभ होने की संभावना सोची गई?

टिप्पणी

....

....

....

2.8 सारांश

- बहुभाषिकता भारत का औसत मिजाज है।
- बहुभाषी होना व्यक्तिगत या सामाजिक स्तर पर भारत के लिए समस्या का विषय नहीं है बल्कि यह हमारे लिए एक संसाधन का काम करता है। और, हमारी सांस्कृतिक सम्पन्नता को दर्शाता है।
- जिनको एक से अधिक भाशाएँ आती हैं उनकी भाषा की प्रवीणता तो निःसन्देह बढ़िया होती ही है, समाज के प्रति उनका नजरिया भी स्पष्ट और उदार होता है।
- किसी देश के बहुभाषी होने या एकभाषी होने में उसकी संस्कृति तथा भाषाओं के प्रति उसकी मानसिकता की भी मुख्य्य भूमिका होती है।
- यदि हम भाषाओं के प्रति उदार रुख अपनाते हैं तो आसपास की सभी भाषाओं को जीवित रहने व पनपने में सहयोग मिलता है, इसके विपरीत दूसरी भाषाओं के प्रति विमोह या संकुचित सोच आपसी झगड़े का कारण बनती है।
- भारत में चार भिन्न भाषा परिवारों से संबंधित भाषाएँ बोली जाती हैं बावजूद इसके भारत एक भाषाई क्षेत्र है।
- भाषाई दृष्टि से भाषा व बोली में कोई फ़र्क नहीं होता है।
- कविता, कहानी, नाटक, इतिहास, आलोचना, जीवनवृत्त, यात्रावृतांत्त, निबंध, डायरी, रिपोर्ताज आदि ने हिन्दी के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया।
- संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 के दिन हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया तथा अंग्रेजी को सह–राजभाषा का दर्जा दिया गया।
- भारत के बहुभाषी समाज में अंग्रेजी एक वैश्विक भाषा है।
- 'त्रिभाषा सूत्र' एक रणनीति है जिसके अंतर्गत कई भाषाएँ सीखने के मार्ग को प्रशस्त किया गया है।

टिप्पणी

2.9 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

Agnihotri, R. K. 2007. *Hindi: An Essential Grammar*. London: Routledge

Agnihotri, R. K. 2007. *Towards a Pedagogical Paradigm Rooted in Multilinguality*. International Multilingual Research Journal, Vol.(2), 1-10

Agnihotri, R. K. and Vandyopadhyay, P. K. 2000 (ed.) *Bha:sha: Bahubha:shita: aur Hindi.* New Delhi: Shilalekh

Agnihotri, R. K. and Kumar, Sanjay. 2001. *Bha:sha, Boli aur Samaaj : Ek Antah Samvaad.* New Delhi: Deshkaal

Agrawal, J.C. 2006. *Rashtriiya Shikshaa Niiti.* New Delhi: Prabhat

Bhatia, Kailash Chandra. 1989. *Bhartiiya Bhashayen.* New Delhi: Prabhat

National Curriculum Framework (NCF). 2005. New Delhi: NCERT

2.10 अंत्य इकाई अभ्यास

1. भारत की भाषाई विविधता को अपने शब्दों में समझाइए।
2. 'बहुभाषिकता भारत के लिए कोई समस्या न होकर एक संपदा है।' समझाइए।
3. भारत में कौन–कौन से भाषा परिवार हैं?
4. 'भारत एक भाशाई क्षेत्र है।' कैसे?
5. किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा घोषित करने के लिए क्या मापदंड तय किए गए हैं?
6. हिन्दी साहित्य के विकास में ब्रजभाषा, मैथिली और अवधी का बड़ा योगदान रहा है। इस कथन के पक्ष अथवा विपक्ष में अपने विचार व्यक्त करें।
7. हास्य–व्यंग्य लेख, आलोचना, जीवनी, आत्मकथाएँ, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्टिंग, डायरी, यात्रा विवरण, नाटक, निबंध आदि हिन्दी साहित्य के विकास में सहायक हैं। इस कथन पर अपने विचार दीजिए।
8. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में बहुभाषिकता के बारे में क्या विचार व्यक्त किए गए हैं? इस बारे में आपके क्या विचार हैं?
9. संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्तमान में कितनी भाषाएँ हैं? नाम बताइए।
10. नागा जनजाति की भाषा संबंधी उदारता उन्हें बहुभाषी बना देती है। नागा लोग ऐसा क्या करते हैं कि उन्हें भाषा के संबंध में उदार कहा गया है?

प्रदत्त कार्य (Assignment)

- अपने आसपास के एक या दो गाँवों का सर्वे कीजिए और यह पता लगाइए कि क्या वहाँ के लोग बहुभाषी हैं? वे कौन–कौन सी भाषाएँ जानते हैं?
- हिन्दी भाषा में विद्यार्थियों की रुचि विकसित करने की दृष्टि से आप एक शिक्षक के रूप में हिन्दी दिवस (14 सितम्बर) पर क्या गतिविधियाँ आयोजित करना चाहेंगे?
- अपने आस–पास के स्कूलों में जाकर पता लगाइए कि वहाँ 'त्रिभाषा सूत्र' के तहत कौनसी भाषाएँ पढ़ाई जा रही हैं।

टिप्पणी

इकाई 3 भाषा–अधिगम एवं भाषा–शिक्षण

संरचना

3.0 परिचय

3.1 अधिगम उद्देश्य

3.2 प्रथम भाषा–अर्जन

- *3.2.1 भाषा के लिए मानव शरीर की जैविक अनुकूलता*
- *3.2.2 परिवेश की भूमिका*
- *3.2.3 भाषा सीखने की अवस्थाएँ*

3.3 द्वितीय भाषा अर्जन/अधिगम

- *3.3.1 प्रथम एवं द्वितीय भाषा अधिगम में भेद*
- *3.3.2 द्वितीय भाषा सीखने में कैसे मदद करें*
- *3.3.3 द्वितीय भाषा में क्षमता विकसित करना*
- *3.3.4 क्या द्वितीय भाषा सीखने में हमारी प्रथम भाषा बाधा उत्पन्न करती है?*

3.4 भाषा–शिक्षण के तरीके

- ***3.4.1** व्याकरण अनुवाद विधि **(Grammar Translation Method)***
- ***3.4.2** प्रत्यक्ष विधि **(Direct Method)***
- ***3.4.3** श्रवण–भाषण विधि **(Audio Lingual Method)***
- ***3.4.4** संप्रेषणात्मक विधि **(Communicative Method)***
- ***3.4.5** स्वाभाविक तरीका **(Natural Approach)***

3.5 सारांश

3.6 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.7 अंत्य इकाई अभ्यास

3.0 परिचय

यदि हम नवजात शिशु की अवस्था से तीन–चार वर्ष के बच्चों की भाषा अर्जन की प्रक्रिया पर ध्यान दें तो उसके माध्यम से कक्षा में भाषा–शिक्षण के बारे में बहुत कुछ सीखा जा

सकता है। यह इकाई भाषा–अधिगम और भाषा–शिक्षण के पारस्परिक संबंधों को विस्तार से व्याख्यायित करेगी।

यह इकाई इस बुनियादी सवाल के साथ आरम्भ होगी कि बच्चे भाषा कैसे अर्जित करते हैं? यहाँ भाषा से तात्पर्य उस भाषा से है जिसे बच्चे घर पर अपनी प्रथम भाषा के रूप में अर्जित करते हैं। इसके बाद इस इकाई में इस बात पर विचार किया जाएगा कि द्वितीय भाषा में भाषिक–क्षमता के विकास की प्रक्रियाएँ और 'अर्जन' प्रक्रियाएँ कैसे लगभग एक समान हैं। यह इकाई इस दावे को खारिज करने के सबूत भी प्रस्तुत करेगी कि द्वितीय भाषा की अधिकांश गलतियाँ प्रथम भाषा के प्रभाव के कारण होती हैं। इसके पश्चात् इस इकाई में द्वितीय भाषा शिक्षण की कुछ प्रणालियों एवं सिद्धांतों पर भी बात की जाएगी जिनका प्रयोग लम्बे समय से होता रहा है। साथ ही उस प्रणाली को अपनाने की जरूरत पर भी बात की जाएगी जो कि बच्चे के भाषा–अर्जन की स्वाभाविक प्रक्रिया के नजदीक है। यह इकाई भाषा–अधिगम की उन तमाम समस्याओं पर चर्चा के साथ समाप्त होगी जिन्हें शिक्षक दूर कर सकते हैं तथा कक्षा में शिक्षण के दौरान जिनके प्रति शिक्षकों को संवेदनशील होने की जरूरत है।

3.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- 'बच्चों के भाषा विकास की प्रक्रिया को समझ पाएंगे;
- 'प्रथम भाषा–अर्जन और द्वितीय भाषा–अधिगम में संबंध' को स्पष्ट कर पाएँगे;
- 'कक्षा में भाषा कैसे सिखानी चाहिए' पर अपनी राय दे पाएँगे; एवं
- 'शिक्षण की समस्याओं के प्रति ज्यादा संवेदनशील होंगे।

3.2 प्रथम भाषा–अर्जन

कैलिफोर्निया के बाल चिकित्सालय में 1970 में ज़िनी नाम की एक लड़की भर्ती की गयी थी। उस समय वह तेरह साल की थी। उसे बीस माह की अवस्था में ही एक छोटे से कमरे में कैद कर दिया गया था। एकांत कारावास के दौरान उसे या तो प्रसाधन कुर्सी **(Potty Chair)** से बाँध दिया जाता था या फिर एक छोटे से बिस्तरे में जो कि तार से बने जाल से ढँका हुआ था। टी.वी. और रेडियो से उसका कोई सम्पर्क नहीं था। मानवीय सम्पर्क के नाम पर उसका एकमात्र सरोकार उसकी माँ से था जो उसे खाना खिलाया करती थी। इस स्थिति का कारण यह था कि ज़िनी के पिता को उसकी कोई भी आवाज बर्दाश्त नहीं होती थी जिसके लिए वह उसे अक्सर पीटा करता था। जब ज़िनी मिली तब वह बोल नहीं सकती थी। और यहाँ तक कि वर्षों बाद भी वह पूर्णतः व्याकरणिक वाक्यों को बोलने में असमर्थ थी जबकि उसे भाषा के सामान्य घरेलू परिवेश में भी रखा गया।

टिप्पणी

संध्या जब बीस वर्ष की थी तो उसके साथ एक कार दुर्घटना हो गयी। उसे सिर में चोट लगी, जिसमें उसके मस्तिष्क का बायाँ हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया। परिणामस्वरूप संध्या की भाषा बुरी तरह प्रभावित हो गयी। जब उससे यह पूछा गया कि उसने नाश्ते में क्या खाया तो उसने कहा कि ''मैं पोहा खा और पी दूध।'' यह किसी भी दृष्टि से एक सामान्य और पूर्ण वाक्य नहीं है।

होम्ना मेरे दोस्त की चार साल की पोती है। उसका जन्म दिल्ली में हुआ था। उसके घर पर हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी और मंड्याली (हिमाचल प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा) भाषाएँ बोली जाती हैं। वह इन सभी भाषाओं को सहजता से सुनती है तथा उनके वक्ताओं के साथ वह जिस भाषा में सहज महसूस करती है, बातचीत करती है। जब वह ढाई साल की थी तो कर्नाटक चली गई। उसके घर में एक तमिल आया काम करती है और स्कूल में आधे दोस्त तमिल हैं। बंगलुरू में दिखाने से भूगोल बिना विशेष प्रयास के बच्चे सीख जाएंगे। परिणाम यह हुआ कि उसने कन्नड़ और तमिल भी सुनना शुरू कर दिया और आज स्थिति यह है कि वह अपनी नौकरानी से धाराप्रवाह तमिल में बात करती है जबकि घर के किसी भी अन्य सदस्य को उनकी बातचीत का छोटा अंश भी समझ में नहीं आता। वह अब पूरी दक्षता से थोड़े बहुत तमिल और कन्नड़ के गीत भी गाती है तथा अपने दोस्तों से प्रायः इन भाषाओं में बात भी करती है। साथ ही वह हिन्दी और अंग्रेजी भी धारा प्रवाह बोलती है।

जीवन की उपर्युक्त सच्ची परिस्थितियाँ हमें भाषा–अर्जन के बारे में क्या बताती हैं? क्या हम इसलिए कोई भाषा अर्जित कर लेते हैं क्योंकि उसे अपने चारों ओर सुनते हैं या फिर हमारी जैविक संरचना इस भाषा–अर्जन में कोई भूमिका अदा करती है? संध्या, ज़िनी और होम्ना के उदाहरण इन दोनों के पक्ष में सबूत प्रस्तुत करते हैं। संध्या के मस्तिष्क में जब चोट लगी तो उसके बोलने की क्षमता प्रभावित हो गयी और ज़िनी इसलिए कोई भाषा नहीं सीख पायी क्योंकि उसे उपयुक्त भाषिक वातावरण नहीं मिल पाया। जबकि दूसरी तरफ होम्ना ने एकाधिक भाषाएँ सीख लीं क्योंकि उसे उसके घरेलू परिवेश में उन भाषाओं का उचित सान्निध्य मिला। होम्ना की तरह बहुत सारे बच्चे बिना किसी शिक्षण के और बिना किसी प्रयास के आसानी से अपने घरेलू परिवेश में बोली जाने वाली एकाधिक भाषाएँ सीख लेते हैं। हमारी जैविक संरचना हमें भाषार्जन की व्यापक क्षमता मुहैया कराती है जैसा कि परिवेश हमें आवश्यक एवं उपयुक्त माहौल उपलब्ध कराता है। भाषा के अर्जन में प्रकृति और परिवेश दोनों का अपना महत्त्व है, दोनों की अपनी भूमिका है।

जैसा कि पहली इकाई में दिखाया गया है भाषा की संरचनात्मक व्यवस्था अत्यधिक जटिल व विषम होती है। फिर भी तीन–चार साल की बच्ची एक ही नहीं दो–तीन भाषाओं के व्याकरण को सहज ही आत्मसात कर लेती है। इससे स्पष्ट है कि हम लोग भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता लेकर पैदा होते हैं और बच्चे यह क्षमता लेकर स्कूल आते हैं। शिक्षा में दखल देने वाले हर आदमी के लिए यह बात समझना जरूरी है। और यह बात समझना भी उतना ही जरूरी है कि यदि क्षमता के इस पौधे को एक भाषाई दृष्टि से समृद्ध व स्नेहपूर्ण वातावरण नहीं मिला तो यह क्षमता पनप नहीं पाएगी। यदि आप निम्न–प्राथमिक

अथवा प्राथमिक कक्षाओं में भी पढ़ा रहे हैं तो सभी बच्चों को मातृभाषा में थोड़ा बहन बोलने को प्रोत्साहित कीजिए और सभों में एक दूसरे की भाषा में दो–चार वाक्य सीख कर बोलने कहिए। ऐसा करने से बच्चों में भारत में विविधता में एकता का जीवन उदाहरण मिलेगा और उन्हें भारत के मानचित्र पर कहां ये भाषाएं बोली जाती हैं।

पाठगत प्रश्न

1. बच्चे छोटी उम्र में कई भाषाएं क्यों सीखे जाते हैं?

   ....

   ....

   ....

2. आपके स्कूल में बच्चे कितनी भाषाएँ बोलते हैं जो कि उनके घरेलू परिवेश में बोली जाती हैं?

   ....

   ....

   ....

3. एक बच्चे के स्वाभाविक भाषा विकास के लिए कौनसी दो बातों का होना जरूरी है?

   ....

   ....

   ....

3.2.1 भाषा के लिए मानव शरीर की जैविक अनुकूलता

मानव जाति की जैविक संरचना भाषा के लिए उपयुक्त है। इसका मतलब यह है कि मनुष्य अपने शरीर के विभिन्न अंगों की सहायता से ध्वनियों का उच्चारण कर सकता है, उसे सुन सकता है तथा उन ध्वनियों को समझ सकता है। दुनिया भर के सभी भाषा–भाषी इन्हीं अंगों की सहायता से अलग–अलग भाषाएं बोलते हैं।

बोलना

ध्वनियों के उच्चारण में मुख्यतः फेफड़ा, स्वर यंत्र (larynx) ग्रसनी (pharynx) एवं मुँह की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि बोलने के दौरान हवा इन अंगों से होती हुई बाहर निकलती है। मानव स्वर यंत्र की बनावट अन्य विकसित पशुओं की तुलना में काफी सरल होती है जिससे हवा बिना किसी अवरोध के बाहर निकलती है। मानव स्वरयंत्र की एक दूसरी विशेषता यह भी है कि एक वयस्क मानव का स्वर यंत्र, वयस्क चिम्पैंजी या तीन माह

टिप्पणी

के मानव शिशु के स्वर यंत्र से नीचे स्थित होता है। हालाँकि स्वर यंत्र के नीचे होने से भोजन के कारण साँस रुक जाने के खतरे बढ़ जाते हैं लेकिन उसके नीचे होने से ध्वनियों के उच्चारण के लिए ग्रसनी में जीभ के पिछले भाग को घुमाने के लिए पर्याप्त स्थान मिल जाता है। इसी तरह मुँह भी ध्वनियों के उच्चारण के लिए महत्त्वपूर्ण है। हमारा मुँह हालाँकि अपेक्षाकृत छोटा होता है लेकिन इसके अंतर्गत ओंठ, दाँत, जीभ और जबड़ा आ जाते हैं जिनका प्रयोग ध्वनियों के उच्चारण में होता है।

समझना

भाषा समझने के लिए मानव मस्तिष्क निहायत ही अनिवार्य अंग है। अन्य बहुत से जानवरों की तरह मनुष्य का मस्तिष्क दो भागों में बँटा हुआ है। निम्न भाग को मस्तिष्क और उच्च भाग को मूर्धा या प्रमस्तिष्क **(Cerebrum)** कहा जाता है। मस्तिष्क–स्तंभ **(Brainstem)** जो कि रीढ़ की हड्डी से जुड़ा होता है साँस और धड़कन को नियंत्रित करते हुए शरीर को जिंदा रखता है। प्रमस्तिष्क हालाँकि जीवन के लिए जरूरी नहीं होता है लेकिन जीव को उनके परिवेश से जोड़ने में सहायता करता है। प्रमस्तिष्क भी दो प्रमस्तिष्कीय अर्द्धवृतों **(Cerebral Hemisphere)** में बँटा होता है। बायाँ अर्द्धवृत्त **(Left Hemisphere)** और दायाँ अर्द्धवृत्त **(Right Hemisphere)**। ये अर्द्धवृत्त आपस में बहुत सारे पुलों के माध्यम से जुड़े होते हैं।

बहुत सारे अध्ययनों से यह पता चला है कि हमारे शरीर के दाहिने हिस्से में जो अनुभव होते हैं उनका बोध हमें बाएँ प्रमस्तिष्कीय अर्द्धवृत्त से होता है और शरीर के बाएँ हिस्से में जो अनुभव होते हैं उनका बोध दाएँ प्रमस्तिष्कीय अर्द्धवृत्त से होता है। अध्ययन हमें यह भी बताते हैं कि दाएँ हाथ से काम करने वाले 90 प्रतिशत तथा बाएँ हाथ से काम करने वाले 70 प्रतिशत लोगों की भाषा बोलने और समझने की क्षमता मस्तिष्क के बाएँ अर्द्धवृत्त में होती है।

पाठगत प्रश्न

1. प्रमस्तिष्क कितने अर्द्धवृत्तों में बँटा होता है?

   (क) एक (ख) दो

   (ग) तीन (घ) चार

2. मस्तिष्क का कौनसा प्रमस्तिष्कीय अर्द्धवृत भाषा के लिए जिम्मेदार होता है और कैसे?

   ....

   ....

   ....

टिप्पणी

3.2.2 परिवेश की भूमिका

समय के साथ चार वर्षीय एक बच्चा अपनी घरेलू भाषाओं को धारा प्रवाह बोलने लगता है। वह इन भाषाओं को सहज रूप से उनके पर्याप्त एवं स्वाभाविक सान्निध्य में सीखता है।

ज़िनी और होम्ना के उदाहरण एक बच्चे के बोलना शुरू करने के लिए भाषा सान्निध्य के महत्त्व को स्पष्ट करते हैं। इस प्रकार भाषा–अर्जन के लिए स्वाभाविक मानवीय पूर्वानुकूलता **(Predisposition)** निर्मित करने में एक भाषा समृद्ध परिवेश जैसेकि देखभाल करने वाले वयस्कों द्वारा बच्चों का उनसे बात किया जाना, बच्चों के आसपास वयस्कों की आपसी बातचीत, उन्हें किताबें पढ़कर सुनाना, गीत गाकर सुनाना, दूसरे बच्चों के साथ बातचीत करना, संगीत सुनाना, टी.वी. दिखाना आदि की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

यह इसाबेल के उदाहरण से भी स्पष्ट होता है। इसाबेल एक गूँगी और बहरी बच्ची थी। वह कोई भाषा नहीं जानती थी। जब वह ओहायो में 1930 में मिली तब वह साढ़े छह साल की थी। उसने अपना अधिकांश समय अपनी माँ के साथ अकेले अँधेरे कमरे में बिताया था। लेकिन एक बार जब उसे सामान्य परिवेश में भाषा का सान्निध्य मिला तो उसने बहुत जल्द ही उस भाषा को बोलना शुरू कर दिया। उसने दो साल में ही इतनी भाषा सीख ली जितना सीखने में सामान्यतः छह साल लगते हैं और जब वह साढ़े आठ साल की हुई तो भाषा के आधार पर उसे दूसरे बच्चों से अलग रखना संभव नहीं रह गया।

भाषा सीखने के लिए एक भाषा समृद्ध परिवेश की तो जरूरत होती ही है साथ ही भाषा सीखने की एक उपयुक्त और निश्चित आयु भी होती है। यह आयु मुख्यतः 2 से 14 साल तक की होती है। इस उम्र में बच्चे सहजता से भाषा सीख लेते हैं। इस तथ्य को हम ज़िनी और इसाबेल के उदाहरण के संदर्भ में समझ सकते हैं। ज़िनी 13 वर्ष की अवस्था में भाषा के सम्पर्क में आयी इसलिए वह ठीक से यानी व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध वाक्यों को बोलना नहीं सीख पायी जबकि इसाबेल साढ़े छह साल की अवस्था में भाषा के सम्पर्क में आयी इसलिए उसने दो साल में ही अन्य बच्चों के जितना बोलना सीख लिया। इसी क्रम में हम यह भी देखते हैं कि जो बच्चे अपने माता–पिता के साथ अपना देश छोड़कर किसी दूसरे देश में बस जाते हैं वे वहाँ की भाषा आसानी से सीख लेते हैं जबकि वयस्कों को सीखने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ना है। ये तमाम परेशानियाँ प्रकृति द्वारा भाषा सीखने के लिए एक सुनिश्चित आयु–सीमा के कारण ही होती हैं। भाषा सीखने में 'क्रिटिकल पीरियड' के महत्त्व का पता इस बात से भी चलता है कि अगर किसी बच्चे को मस्तिष्क के बाएँ प्रमस्तिष्कीय अर्द्धवृत्त (जो कि भाषा संबंधी कार्यों के लिए उत्तरदायी है) में चोट लग जाती है तो उससे उत्पन्न भाषा संबंधी उसके दोष जल्दी दूर हो जाते हैं जबकि एक वयस्क को इस समस्या से उबरने में पूरा जीवन लग जाता है। कहने का मतलब यह है कि जब भाषा सीखने की उपयुक्त अवस्था गुजर जाती है तो मस्तिष्क धीरे–धीरे भाषा सीखने की प्राकृतिक क्षमता खो देता है।

भाषा सीखने में परिवेश की भूमिका के अध्ययन–क्रम में एक दूसरा प्रासंगिक प्रश्न यह है कि क्या बच्चे अपनी घरेलू भाषा को बड़ों का अनुकरण करके सीखते हैं? बहुत सारे अध

ययनों और अवलोकनों से यह पता चला है कि ऐसी बात नहीं है। यदि बच्चे, बड़ों की बातचीत को सुनकर, उनका अनुकरण करके और बड़ों द्वारा कराये गये भाषिक अभ्यास को केवल रटकर ही बोलना सीखते तो कुछ निश्चित और सीमित वाक्य ही बोल पाते। बच्चों के भाषा सीखने की प्रक्रिया पर 'सुधार और अभ्यास प्रक्रिया' या 'उद्दीपन और प्रतिक्रिया' की प्रक्रिया का बहुत कम ही प्रभाव होता है।

प्रत्यक्ष सुधार और पुनः अभ्यास की प्रक्रिया के क्या नतीजे होते हैं इसे हम नीचे दिए गए उदाहरण से समझ सकते हैं जिसमें एक पिता अपनी बच्ची को 'पापा' कहना सिखा रहा है।

पिता : पापा

बच्ची : हाप्पा

पिता : पापा

बच्ची : हाप्पा

(दो बार पुनः दोहराता है)

पिता : पापा

बच्ची : आप्पा

उपर्युक्त उदाहरण में हम देखते हैं कि बच्चे पर दुहराने और अनुकरण करने के लिए दबाव डालकर उसे बोलना नहीं सिखाया जा सकता। तमाम शोधों एवं अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि माता–पिता, बच्चों द्वारा बोलना सीखने के क्रम में की गयी महज कुछ गलतियों को ही सुधारने का प्रयास करते हैं और वो भी खासकर वाक्य की सत्यता संबंधी गलतियों को ही सुधारने पर उनका जोर होता है, व्याकरण की अशुद्धियों को ठीक कराने पर उनका कम ही ध्यान होता है। उदाहरण के लिए एक पिता बच्चे द्वारा बोले गए इस वाक्य को शुद्ध नहीं कराएगा कि 'मम्मी सो रहा है' बल्कि यदि बच्चा मंगलवार की जगह यह कहता है कि 'कल सोमवार है' तो पिता उसे सुधारते हुए 'मंगलवार' बोलने के लिए कहेगा। अनुकरण और अभ्यास की तरह ही भाषा का विस्तार भी बच्चे को भाषा सीखने में बहुत अधिक मदद नहीं करता है। बल्कि भाषा को विस्तृत करके सिखाने पर बच्चों को भाषा सीखने में और कठिनाई ही होती है। बच्चों को संक्षेप में यानी पूरा–पूरा वाक्य न सिखाकर केवल संज्ञा और मुख्य क्रिया से निर्मित वाक्य सिखाया जाय तो वे जल्दी सीखेंगे और भी नहीं होंगे। साथ ही इस तरह से उनका ध्यान भी कुछ खास चीजों पर केन्द्रित किया जा सकता है।

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि एक बच्चे को भाषा सीखने के लिए उसे बड़ों के बहुत सारे और विविध प्रकार के वाक्यों को सुनने की जरूरत होती है। रोजमर्रा के जीवन में विविध संदर्भों में बड़ों द्वारा प्रयुक्त भाषा के विभिन्न रूपों और बच्चों से बड़ों की बातचीत का भाषा सीखने में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

पाठगत प्रश्न

1. माता–पिता बच्चों द्वारा बोले जाने पर किस तरह की गलतियाँ सुधारते है?

   (क) व्याकरण संबंधी (ख) वाक्य संबंधी

   (ग) सत्यता संबंधी (घ) अनुकरण संबंधी

2. इन दोनों में से कौन जल्दी बोल पाएगा? कारण सहित उत्तर दीजिए।

   (क) एक 20 वर्षीय व्यक्ति जिसके मस्तिष्क का बायाँ प्रमस्तिष्कीय अर्द्धवृत्त एक कार दुर्घटना में क्षतिग्रस्त हो गया हो।

   ....

   ....

   ....

   (ख) एक 5 वर्षीय बालक जिसके मस्तिष्क का बायाँ प्रमस्तिष्कीय अर्द्धवृत्त गिरने के कारण क्षतिग्रस्त हो गया हो।

   ....

   ....

   ....

3. निम्नलिखित में से कौनसी चीज बच्चों को भाषा सीखने में मदद करती है?

   (क) एक घरेलू वातावरण जहाँ बच्चे को बोलने नहीं दिया जाता है।

   (ख) दूसरे बच्चों के साथ खेलना।

   (ग) बड़ों की बातचीत को सुनना।

   (घ) बच्चों को सही वाक्यों को दुहराने के लिए कहना।

   (ङ) बच्चा जो बोलता है उसे दुहराना।

3.2.3 भाषा सीखने की अवस्थाएँ

भाषा सीखने के क्रम में बच्चे कुछ निश्चित अवस्थाओं (Stages) से होकर गुजरते हैं। ध्यातव्य है कि भाषा सीखने की इन अवस्थाओं का क्रम तो समान होता है लेकिन यह कोई जरूरी नहीं कि इन अवस्थाओं से गुजरने की प्रत्येक बच्चे की आयु समान हो। यानी अलग–अलग बच्चे अलग–अलग आयु में इन अवस्थाओं से (इसी क्रम में) गुजर सकते हैं।

कूइंग/गूइंग :

6 सप्ताह के आसपास बच्चे कूइंग और गूइंग शुरू कर देते हैं। आरम्भ में ये ध्वनियाँ स्वरों

के गुच्छ जैसे– उउउउ, इइइइ की तरह लगती हैं। चार महीने के आसपास इन स्वर गुच्छों के आरम्भ में व्यंजन ध्वनियाँ जुड़ जाती हैं और वे बहुत हद तक कूऊऊऊ, गूऊऊऊ की तरह सुनायी देते हैं।

बैब्लिंग :

6 महीने के आसपास जब बच्चे सामान्यतः बैठना शुरू कर देते हैं तब वे बैब्लिंग करने लगते हैं। इस अवस्था में वे कई प्रकार के स्वरों और व्यंजनों का उच्चारण करने लगते हैं जो कि एक व्यंजन और एक स्वर के गुच्छ के रूप में होते हैं। जैसे– गि–गि–गि, का–का–का, मा–मा–मा, पा–पा–पा, मि–मि–मि आदि।

नौ से दस महीने के आसपास इस मिश्रण में परिवर्तन आने लगते हैं। जैसे– बा–बा–गा–गा और यह आगे के महीनों में और जटिल होता जाता है। जैसे– मिम–मिम–माइ–याआआआ। इस तरह बच्चे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने लगते हैं, किसी चीज़ पर जोर देने लगते हैं तथा अनुकरण करने लगते हैं। माता–पिता को लगता है कि बच्चे उनसे बातें कर रहे हैं। इसीलिए प्रतिक्रिया स्वरूप माता–पिता भी उनसे बातें करने लगते हैं। इससे बच्चों को भाषा की संवादात्मक या सम्प्रेषणात्मक भूमिका का कुछ अनुभव हो जाता है।

एक शब्द की अवस्था :

एक वर्ष के आसपास बच्चे पहली बार ऐसे शब्द बोलते हैं जिन्हें पहचाना जा सकता है। इनमें से बहुत सारे शब्द ऐसे होते हैं जिन्हें वे अपने आसपास सुनते हैं जैसे– व्यक्तियों और वस्तुओं के नाम– मामा, पापा, भइया, दीदी, चिड़िया, गुड़िया आदि। इस अवस्था में वे ना, खतम और देदो जैसे शब्द भी बोलने लगते हैं। इस अवस्था को 'होलोफ्रेस्टिक अवस्था' भी कहा जाता है क्योंकि इसमें एक शब्द का प्रयोग एक पूरे पद या वाक्य के रूप में किया जाता है। जैसे– बच्चा 'मुझे पानी चाहिए' के स्थान पर केवल 'मम मम' (पानी) करता है। इस अवस्था में बच्चे अति सामान्यीकरण के कारण गलतियाँ करते हैं। जैसे– 'कुत्ता' शब्द का अति सामान्यीकरण करते हुए एक बच्चा हर चौपाये जानवर को 'कुत्ता' ही कहता है।

दो शब्द की अवस्था :

डेढ़ साल की आयु तक बच्चे के पास सामान्यतः 50 शब्दों की एक सक्रिय शब्दावली हो जाती है और वह दो–दो शब्दों को एक साथ रखना शुरू कर देता है। जैसे– दूध नहीं, खाना नहीं, दूध खतम, बॉल देदो आदि। हालाँकि इन शब्दों के अर्थ 'एक शब्द की अवस्था' में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ के समान ही हैं लेकिन बाद में इस अवस्था में बच्चा नये अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग भी करने लगता है। जैसे– मम्मी खाना, जीजी मारा, घूमी जाना, पापा फोन, दूदु पीना आदि। इस अवस्था में बच्चों की अभिव्यक्ति से उनकी घरेलू भाषा की वाक्य संरचना झलकने लगती है। इस अवस्था को 'टेलिग्राफिक स्पीच' भी कहा जाता है क्योंकि इसमें प्रयुक्त वाक्य टेलिग्राफ संदेश की तरह केवल मूल शब्दों से निर्मित होते हैं। जैसे–

दूध, मम्मी, खाना, पापा, मारा आदि। इसमें प्रकार्यात्मक शब्दों जैसे– ने, को, है, पर, से आदि तथा बहुवचन बनाने वाले प्रत्ययों जैसे– याँ, ओं, इयाँ आदि का प्रयोग नहीं होता।

इस अवस्था में बच्चे अनुकरण करने लगते हैं तथा बड़ों द्वारा बोले गए वाक्यों को छोटा करके बोलने लगते हैं। जैसे– 'पापा जा रहे हैं।' को बच्चा 'पापा जा' बोलता है। 'हम घूमने जा रहे हैं।' को 'घूमी जा' बोलता है।

लम्बे कथन :

समय के साथ बच्चों के वाक्यों में शब्दों की संख्या बढ़ती जाती है और 2 से 4 साल के बीच वे बहुत सारे व्याकरणिक रूप भी सीख लेते हैं। दिलचस्प यह है कि अधिकांश बच्चे इन रूपों को मोटे तौर पर समान क्रम में सीखते हैं। अंग्रेजी भाषी बच्चों पर किए गए अध्ययन से यह पता चला है कि बच्चे कुछ व्याकरणिक रूप पहले सीख लेते हैं और कुछ बाद में। जैसे– बच्चे **continuous 'ing'** फॉर्म **(I am singing)** और बहुवचन बनाने वाले **'s' (shoes, dogs)** के प्रयोग को पहले सीख लेते हैं जबकि अधिकार या आधिपत्य वाले **'s' (daddy's car)** और उत्तम पुरुष एक वचन में क्रिया के साथ प्रयुक्त होने वाले **'s' (she eats)** का प्रयोग बहुत बाद में सीखते हैं। इसी तरह वे भूतकाल की अनियमित क्रियाओं जैसे– **came, went, saw** आदि को भूतकाल की नियमित क्रियाओं जैसे– **loved, played, worked** आदि से पहले सीख लेते हैं। इसका मतलब यह है कि भाषा सीखना केवल अभ्यास और सुधार तथा अनुकरण का एक सीधा सरल मामला नहीं है। यदि ऐसा होता तो सभी बच्चे भाषा सीखने के दौरान समान अवस्थाओं से होकर नहीं गुजरते और न ही **comed** और **seed** जैसे **odd forms** जो कि वे हर समय सुनते हैं की जगह पर **came** और **saw** जैसे सामान्य रूपों को रखते।

यह कहा जा सकता है कि बच्चे जिस समय से बोलना शुरू करते हैं उन्हें यह अहसास हो जाता है कि जो भाषा वे बोलते हैं उसके कुछ नियम हैं। और, बोलना सीखने के दौरान बच्चे जो गलतियाँ करते हैं वे इस तथ्य के सबूत हैं कि बच्चे इन नियमों को सीखने की कोशिश करते हैं। उनकी भाषा किसी भी अवस्था में शब्दों का अव्यवस्थित समूह या संग्रह मात्र नहीं होती बल्कि वह नियमों के अनुसार ही होती है। यह अलग बात है कि वह बड़ों की भाषा से भिन्न होती है।

पाठगत प्रश्न

1. बच्चे अति सामान्यीकरण किस अवस्था में करते हैं?

   (क) कूइंग/गूइंग (ख) बैब्लिंग

   (ग) एक शब्द की अवस्था (घ) दो शब्द की अवस्था

2. टेलिग्राफिक स्पीच किसे कहते हैं?

   ....

टिप्पणी

....

....

3. एक बच्चा जिसकी घरेलू भाषा अंग्रेजी है वह बहुवचनों को सीखने के क्रम में निम्नलिखित अवस्थाओं से होकर गुजरता है–

- पहले वह बहुवचन के अनियमित रूपों को सीखता है। जैसे– **Foot-Feet, Man-Men** आदि।
- तब वह बहुवचन के नियमित रूपों को सीखता है। जैसे– **Cats, Bags** आदि।
- वह बहुवचन बनाने वाले नियमों का अति सामान्यीकरण करता है तथा **Foot** का **Feets** एवं **Man** का **Mens** करता है।
- अंततः अति सामान्यीकृत बहुवचन सही कर लिए जाते हैं और बच्चा **Foot** का **Feet** तथा **Man** का **Men** बहुवचन बनाने लगता है।

  बच्चों के भाषा सीखने के बारे में यह आपको क्या बताता है?

3.3 द्वितीय भाषा अर्जन /अधिगम

जब तक बच्चे विद्यालय जाने की अवस्था में पहुँचते हैं वे अपनी घरेलू भाषाओं में दक्ष हो चुके होते हैं। कुछ बच्चों के लिए विद्यालय में उनकी शिक्षा का माध्यम उनके द्वारा घर में बोली जाने वाली भाषा होती है तो कुछ बच्चों के लिए इससे भिन्न नई भाषा। उदाहरण के लिए बिहार में रहने वाला बच्चा घर पर भोजपुरी, मगही या मैथिली बोलता है और स्कूल में उसकी शिक्षा का माध्यम हिन्दी अथवा अंग्रेजी होती है या फिर बंगाल में रहने वाला बच्चा जो घर पर हिन्दी, सिलेटी, संथाली या नेपाली बोलता है स्कूल में उसका सामना बाँग्ला से होता है। उपर्युक्त दोनों ही स्थितियों में बच्चे को प्राथमिक कक्षाओं में अंग्रेजी भी सीखनी पड़ सकती है। यहाँ हिन्दी, बाँग्ला अथवा अंग्रेजी और अंग्रेजी बच्चों के लिए द्वितीय भाषाएँ हैं।

उपर्युक्त परिस्थितियों में द्वितीय भाषा को सीखना एक व्यापक चुनौती सामने लाता है वह इस रूप में कि या तो बच्चे अपने घरेलू वातावरण में द्वितीय भाषा से बिल्कुल अछूते रहते हैं या फिर बहुत कम सीमा तक उनसे उनका सम्पर्क हो पाता है। बच्चों को विद्यालय में भी बहुत कम समय के लिए द्वितीय भाषा सुनने या बोलने का समय मिल पाता है और अंग्रेजी भाषा के संदर्भ में तो हम अक्सर पाते हैं कि यह साथ पर्याप्त रूप से नहीं मिल पाता है क्योंकि हम अध्यापक भी बहुत कम अंग्रेजी बोलते हैं।

3.3.1 प्रथम एवं द्वितीय भाषा अधिगम में भेद

स्वसे पहले भाषा–अर्जन और भाषा–अधिगम के अंतर को समझ लिया जाय। भाषा–अर्जन से तात्पर्य स्वाभाविक, सम्प्रेषणपरक स्थितियों (यानी जैसी स्थिति हमें घर पर भाषा सीखने

टिप्पणी

के लिए उपलब्ध होती है) में भाषा का प्रयोग करते हुए उसमें भाषिक क्षमता के विकास से है। दूसरी ओर भाषा–अधिगम से तात्पर्य किसी भाषा के नियमों और शब्द भंडार को औपचारिक रूप से कक्षा में बैठकर सीखने और तत्पश्चात् उस भाषा की भाषिक क्षमता में विकास से है।

इन दोनों का जिक्र भाषा वैज्ञानिक क्रेशन द्वितीय भाषा में क्षमता विकास के तरीकों के रूप में करते हैं और कहते हैं कि ''भाषा अर्जन और भाषा अधिगम यदि समरूप नहीं है तो मिलती–जुलती प्रक्रियाएँ हैं। भाषा–अर्जन के माध्यम से बच्चे अपनी प्रथम भाषा में योग्यता विकसित करते हैं। यह एक अवचेतन प्रक्रिया है। भाषा सीखने वाले सामान्यतः इस बात से अनभिज्ञ होते हैं कि वे भाषा सीख रहे हैं। वे केवल इसी तथ्य से अवगत होते हैं कि वे सम्प्रेषण के लिए भाषा का प्रयोग कर रहे हैंकृकृ (इस प्रक्रिया में) हम सामान्यतः भाषा सीखते समय इसके नियमों को सीखने के प्रति सचेत नहीं होते हैं। बावजूद इसके हमारे मन में शुद्धता के प्रति आग्रह होता है। व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध वाक्य हमें सही प्रतीत होते हैं तथा त्रुटियाँ गलत। भाषा–अर्जन का मतलब ही है कि भाषा को अप्रत्यक्ष, अनौपचारिक और स्वाभाविक रूप से सीखना।

द्वितीय भाषा में क्षमता बढ़ाने का दूसरा तरीका भाषा–अधिगम है। आगे से हम 'अधिगम' शब्द का प्रयोग द्वितीय भाषा के सचेत ज्ञान यानी उसके नियमों को जानना, उनके प्रति सचेत होना, और उनके विषय में बोल पाने के लिए करेंगे। गैर तकनीकी शब्दावली में 'अधिगम' से तात्पर्य भाषा के उस रूप के बारे में जानना है जो कि ज्यादातर लोगों को व्याकरण या नियमों के रूप में पता होता है। इसके पर्यायवाची रूपों में भाषा का औपचारिक ज्ञान या प्रत्यक्ष रूप से सीखना शामिल है।'' (क्रेशन 1982:10)

हमने पहले चर्चा किया कि बच्चों में भाषा सीखने की व्यापक क्षमता होती है। अधिकांश बच्चे बचपन में अपने घरेलू वातावरण से कम–से–कम दो भाषाएँ सीख लेते हैं और होम्ना की तरह अधिक भाषाएँ भी सीख लेते हैं। यदि हम इस तथ्य को मानते हैं कि बच्चों के पास भाषाएँ सीखने की अपार क्षमता होती है, बशर्ते कि उन्हें सामान्य रूप से तथा प्रतिदिन भाषाओं का सान्निध्य प्राप्त हो, तो हम इस बात का भी समर्थन करेंगे कि द्वितीय भाषा का पर्याप्त और उपयुक्त वातावरण मिलने पर वह भी आसानी से सीखी जा सकती है।

हम उन बच्चों का भी उदाहरण ले सकते हैं जो अपने परिवार के सदस्यों के साथ विदेशों में बस जाते हैं। ऐसे बच्चे जो कि अपने माता–पिता के साथ भारत को छोड़कर अंग्रेजी भाषी देश जैसे कि ब्रिटेन या अमेरिका में बस गए हैं वे घर पर हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं और अपने सहपाठियों तथा अध्यापकों से बातचीत करते समय तथा अन्य स्थलों जैसे– बाज़ार, टी.वी. आदि से भी अंग्रेजी सीख रहे होते हैं। अतः द्वितीय भाषा से जितना घनिष्ठ सम्पर्क होगा उसे सीखने की संभावनाएँ उतनी ही बढ़ जाएँगी।

शिक्षकों के लिए बच्चों को द्वितीय भाषा सीखने में मदद करना एक चुनौती भरा कार्य है। प्रथम भाषा को सीखने के लिए जो भाषा समृद्ध वातावरण उपलब्ध होता है वह हमेशा द्वितीय भाषा में उपलब्ध नहीं होता है। अंग्रेजी भाषा के संबंध में भाषा का यह सान्निध्य

बच्चों को एक दिन में 30 मिनट या उससे भी कम समय के लिए उपलब्ध हो पाता है। बच्चों का द्वितीय भाषा ज्ञान शिक्षकों एवं सहपाठियों की द्वितीय भाषा दक्षता पर निर्भर करता है। यदि हम शिक्षकों की दक्षता द्वितीय भाषा में कमजोर हो तो बच्चे और भी धीरे सीखेंगे। हमें द्वितीय भाषा की दक्षता सुधारनी चाहिये और बच्चों को द्वितीय भाषा में अधिक से अधिकार बात करने को प्रोत्साहित करना चाहिये। आपने तो समझ ही लिया है कि यदि द्वितीय भाषा का प्रथम भाषा जैसा परिवेश बनाने में सफल हो गए तो द्वितीय भाषा अधिगम मुश्किल नहीं होगा।

3.3.2 द्वितीय भाषा सीखने में कैसे मदद करें

यद्यपि यह चुनौतीपूर्ण है कि बच्चों को उनकी घरेलू भाषा के समान द्वितीय भाषा के लिए समृद्ध वातावरण उपलब्ध कराया जाय। भाषा वैज्ञानिक क्रैशन के शब्दों में द्वितीय भाषा में बच्चों को बोधगम्य सामग्री **(Comprehensible input)** की आवश्यकता होती है। इससे तात्पर्य यह है कि उस भाषा का प्रयोग किया जाय जिस भाषा को समझने में बच्चे सक्षम हों और जो उनके लिए चुनौतीपूर्ण भी हो। ऐसी भाषा स्वाभाविक रूप से सम्प्रेषणपरक स्थिति में उपलब्ध करायी जानी चाहिए जो कि उनके लिए अर्थपूर्ण हों और जो उन्हें इस चुनौती को मात देने में मदद करें। उदाहरण के लिए यदि आपकी कक्षा में विद्यार्थी अंग्रेजी के कुछ शब्दों को जानता है तो बोधगम्य सामग्री का मतलब होगा कि इन शब्दों का प्रयोग वाक्यों में किया जाय जो उनके लिए अर्थपूर्ण हों। अध्यापक निर्देश दे सकता है कि बोर्ड को मिटाओ **(Rub the board)**, दरवाजे को बंद करो **(Close the door)** आदि। ऐसा करने पर अध्यापक की क्रियाएँ और संदर्भ बच्चे को शब्दों के आसपास अर्थ गढ़ने में मदद करेंगी जो कि वह पहले से जानता है। इस प्रकार अध्यापक निर्देश के रूप में बोधगम्य सामग्री प्रदान कर रहा होता है जिसमें उन शब्दों का प्रयोग होता है जिन्हें बच्चा पहले से जानता है। द्वितीय भाषा शिक्षण की परम्परागत विधियों के विपरीत यह विधि भाषा सीखने को अर्थ से संरचना की ओर ले जाती है। तथा यह विधि ध्यान से सुनने पर बल देती है और भाषा में पर्याप्त दक्षता अर्जित कर लेने के बाद ही बोलने पर जोर देती है। क्रेशन ने साफ कहा है कि "धारा प्रवाह बोलना प्रत्यक्ष रूप से नहीं सिखाया जा सकता। यह समय के साथ अपने आप आता है। बोलना सिखाने का उत्तम तरीका और संभवतः एक मात्र तरीका इस मत के अनुसार 'बोधगम्य सामग्री उपलब्ध कराना' है। प्राथमिक वाक् **(primary speech)** तब आएगा जब सीखने वाला स्वयं को तैयार महसूस करेगा। तैयारी की यह स्थिति अलग–अलग लोगों के लिए अलग–अलग समय पर उत्पन्न होती है। यद्यपि ज्यादातर प्राथमिक वाक् व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध नहीं होते। शुद्धता समय के साथ विकसित होती है। जब सीखने वाला सामग्री **(input)** को अधिक सुनता और समझता है।" (क्रेशन, 1982 : 22)

बोधगम्य सामग्री के अतिरिक्त कुछ अन्य कारक भी द्वितीय भाषा सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। जैसे– विद्यार्थी की प्रेरणा, उसका आत्मविश्वास, उसकी उत्सुकता/चिंता और भाषा सीखने के प्रति उसका रवैया। ये कारक द्वितीय भाषा सीखने की प्रक्रिया को बाधित या प्रोत्साहित कर सकते हैं।

बहुत से शोधों में यह भी पाया गया है कि यदि लोगों को बोधगम्य सामग्री प्रदान की जाय लेकिन उनमें अगर भाषा सीखने के प्रति प्रेरणा, आत्मविश्वास और उत्सुकता का अभाव हो तो वे भाषा को सीखने में असफल रहते हैं।

यदि अध्यापक का विद्यार्थियों की प्रेरणा, आत्मविश्वास और रवैये पर अधिक नियंत्रण न हो तो उसे कक्षा में बोधगम्य सामग्री उपलब्ध करानी चाहिए तथा ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए कि बिना किसी चिंता के बच्चे भाषा सीख सकें।

3.3.3 द्वितीय भाषा में क्षमता विकसित करना

भाषा के नियमों को याद कर लेना भाषा सीखने की प्रक्रिया का विकल्प नहीं है जो कि बच्चे को भाषा का धारा प्रवाह प्रयोक्ता बनने में मदद करता है। हालाँकि यह बच्चे द्वारा बोले और लिखे गए भाषा–रूप के सही–गलत की जाँच में सहायता कर सकता है। क्रेशन के अनुसार "सामान्यतः अर्जन द्वितीय भाषा में हमारी अभिव्यक्ति की शुरुआत (initiates) करता है और यही हमारी धारा प्रवाहिता के लिए उत्तरदायी होता है। अधिगम का केवल एक प्रकार्य है और वह है जाँचकर्ता या सम्पादक की तरह काम करना। अधिगम की भूमिका, मात्र हमारे उच्चारण रूपों में परिवर्तन करना है जो कि सीखने की प्रणाली द्वारा पहले ही सीखे जा चुके होते हैं। यह हमारे बोलने या लिखने से पहले या स्वयं संशोधन (self correction) के बाद हो सकता है। "(क्रेशन 1982 : 15)

यह कहने की जरूरत नहीं है कि व्याकरण के नियमों का सचेत रूप से सीखना केवल एक जाँचकर्ता (monitor) के रूप में ही भूमिका निभा सकता है वह भी तब जब व्यक्ति के पास सोचने, विचारने और नियमों का प्रयोग करने के लिए पर्याप्त समय हो तथा बोले जा रहे वाक्यों की उच्चारण शुद्धता पर उसका निरंतर ध्यान हो। सामान्यतः जब वक्ताओं के बीच बातचीत हो रही होती है, तो वहाँ शुद्धता से अधिक धारा प्रवाहिता की आवश्यकता होती है।

पाठगत प्रश्न

1. सामान्यतः अर्जन द्वितीय भाषा में किसकी शुरुआत करता है?

   (क) अभिव्यक्ति (ख) अधिगम

   (ग) स्वयं–संशोधन (घ) सही गलत की जाँच

2. आप किन भाषाओं को अपनी द्वितीय भाषाएँ मानते हैं?

   ....

   ....

   ....

टिप्पणी

3. कौनसी भाषाएँ आपके विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए द्वितीय भाषाएँ हैं?

....

....

....

4. द्वितीय भाषा सिखाने में कौनसे कारक महत्त्वपूर्ण हैं?

....

....

....

3.3.4 क्या द्वितीय भाषा सीखने में हमारी प्रथम भाषा बाधा उत्पन्न करती है?

कुछ समय तक यह सोचा जाता रहा है कि द्वितीय भाषा सीखने के समय बच्चों द्वारा की जाने वाली गलतियाँ प्रथम भाषा के व्याकरण, शब्द भंडार, ध्वनियों आदि के प्रभावस्वरूप होती हैं। इसकी चर्चा हम प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी तथा द्वितीय भाषा के रूप में अंग्रेजी को लेते हुए भाषा के विभिन्न स्तरों पर करेंगे।

व्याकरण

अंग्रेजी और हिन्दी वाक्यों में सबसे सामान्य अंतर यह है कि हिन्दी में क्रिया का स्थान वाक्य के अंत में होता है तो अंग्रेजी में वाक्य के मध्य में। उदाहरण के लिए– मैं सेब खा रहा हूँ। **I am eating an apple.**

हालाँकि यह समस्या अंग्रेजी सीख रहे हिन्दी भाषियों में नहीं दिखती है। हम कभी हिन्दी भाषी को अंग्रेजी में यह बोलते हुए नहीं पाते हैं– **I an apple am eating**. जहाँ वाक्य के अंत में क्रिया को रखा गया हो।

बहुत से शोधों से यह सिद्ध हो चुका है कि द्वितीय भाषा को सीखते समय बच्चों द्वारा की गयी गलतियाँ प्रथम भाषा के हस्तक्षेप के कारण नहीं होती हैं। बच्चे और यहाँ तक कि वयस्क भी द्वितीय भाषा को सीखते समय स्वाभाविक क्रम **(Natural order)** का निर्वाह करते हैं, चाहे उनकी प्रथम भाषा कोई भी हो। यह क्रम प्रथम भाषा को सीखने के क्रम जैसा ही होता है। भिन्न मातृभाषा भाषियों द्वारा अंग्रेजी सीखते समय वर्तमान काल के **'ing'** क्रिया रूप और बहुवचन **'s'** रूप, अन्य पुरुष एकवचन **'s'** तथा अधिकार या आधिपत्य सूचक **'s'** से बहुत पहले सीख लिया जाता है। ऐसे अध्ययनों में 'डुले एवं बर्ट' (1974) द्वारा चीनी और स्पेनिश भाषाभाषी बच्चों पर किए गए सर्वेक्षण मुख्य हैं।

संरचना को सीखते समय बच्चों द्वारा की गयी गलतियों में स्वाभाविक क्रम को देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी के नकारात्मक रूपों को सीखते समय अधिकांश विद्यार्थी नकारात्मक चिह्न को वाक्य के आरम्भ में लगा देते हैं–

टिप्पणी

Not like it now. Ravem (1974)

बाद के चरणों में वे नकारात्मक चिह्न को क्रिया के पहले लगा देते हैं–

I no like this one. Cancino et al.(1975)

और अंततः उसके सही स्थान पर।

चरणों की यह समानता कि विभिन्न मातृभाषाभाषी बच्चे समान द्वितीय भाषा सीखते समय समान प्रक्रिया से गुजरते हैं और यह तथ्य कि प्रथम भाषा को सीखते समय भी यही अवस्थाएँ होती हैं– यह साबित करता है कि हम सभी भाषा सीखने की समान प्राकृतिक प्रक्रिया से गुजरते हैं तथा ये गलतियाँ प्रथम भाषा के कारण उत्पन्न होने वाली बाधाएँ नहीं हैं।

शब्द भंडार

किसी भी भाषा की शब्दावली वहाँ के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश से प्रभावित होती है, जहाँ वह बोली जाती है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी भाषा के भारतीय प्रयोक्ता को सम्प्रेषण के लिए अंग्रेजी का प्रयोग अन्य भारतीय प्रयोक्ताओं से अनिवार्यतः भारतीय संदर्भों में करना होता है जैसे–

- '**दिवाली**' पर एक आदमी मंदिर जाता है और '**पुजारी**' द्वारा '**प्रसाद**' दिया जाता है। वह अपने लिए एक नया '**कुर्ता–पायजामा**' और अपनी पत्नी के लिए नयी '**साड़ी**' खरीदता है। वे अपने घर के चारों ओर '**दिये**' जलाते हैं तथा बहुत तरह की मिठाइयाँ जैसे '**जलेबी**', '**रसगुल्ला**' आदि खाते हैं। (On 'diwali' a person goes to the temple and he is given 'prasad'. He buys a new 'kurta pajama' for himself and new 'sari' for his wife. They light 'diiyaas' around their house and eat various sweets like 'jalebi', 'ras gullas' etc.)
- अखबार पूरे भारत में आयोजित '**धरना**' एवं '**बंद**' की खबरों से भरे थे। (The newspaper was full of reports of 'dharnass' and 'bandhs' being organized all over india.)
- शादी के लिए '**शामियाना**' खूबसूरती से सजाया गया था। (The 'shamiiaanaa' was beautifully decorated for the marriage.)
- '**फेरा**' और '**कन्यादान**' रात में हुआ। (the 'feraa' and the 'kanyaa daan' took place after one at night.)

यहाँ इन्वर्टेड कौमा में लिखे गए शब्द अंग्रेजी के वाक्यों में रोमन लिपि में लिखकर हू–ब–हू प्रयुक्त होते हैं। यह भारतीय प्रयोक्ता की अंग्रेजी पर भारतीय समाज और संस्कृति का प्रभाव है।

वैसे शब्द जो कि देशज अंग्रेजी (Native English) के हिस्से नहीं हैं यानी जो ब्रिटिश,

टिप्पणी

अमेरिकन, ऑस्ट्रेलियन या अन्य किसी तरह की अंग्रेजी के हिस्से नहीं हैं वे भारतीय अंग्रेजी का अंग बन सकते हैं यदि वे भारतीय जीवन शैली से संबंधित विचार को प्रस्तुत करते हों।

इसी के साथ हम यह भी देखते हैं कि जब भारत में अंग्रेजी बोली जाती है तो कुछ शब्दों का प्रयोग अलग तरीके से होता है– अंग्रेजी की देशज शैलियों में 'अंकल' और 'आन्ट' शब्द का प्रयोग केवल सगे–संबंधियों जैसे– मामा, मौसी, बुआ, फूफा आदि के लिए होता है जबकि हम इन शब्दों का प्रयोग पड़ोसियों, दुकानदारों, ड्राइवरों, दोस्त के माता–पिता आदि के लिए भी करते हैं। शब्दों के समूह जैसे कि 'ऐड्रेस ऑफ वेलकम', 'मेमबर्स ऑफ द फैमिली', 'बंच ऑफ कीज' आदि को संक्षिप्त करके क्रमशः 'वेलकम ऐड्रेस', 'फैमिली मेमबर्स', 'की बंच' कर दिया जाता है। इसी तरह अंग्रेजी की देशज शैलियों में केवल 'पोस्टपॉन' शब्द है जबकि भारतीय अंग्रेजी में 'प्रीपॉन शब्द भी है। भारतीय अंग्रेजी में बहुत सारे ऐसे पद भी हैं जिनका अस्तित्व अंग्रेजी की किसी देशज शैली में नहीं मिलता जैसे– 'पिन ड्रॉप साइलेंस', 'चेंज ऑफ हर्ट', 'इच एण्ड एवरी' आदि।

इस प्रकार द्वितीय भाषा में अनुपलब्ध शब्दों के समानार्थी शब्दों को प्रथम भाषा से सीखना, द्वितीय भाषा के शब्दों को अलग तरीके से प्रयोग करना और दो भिन्न भाषाओं एवं संस्कृतियों के परस्पर सम्पर्क से द्वितीय भाषा के परिवेश में बोले जाने वाले नये शब्दों एवं पदों का निर्माण एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। इसे प्रथम भाषा का द्वितीय भाषा में हस्तक्षेप या प्रभाव नहीं कहा जा सकता। हस्तक्षेप शब्द से नकारात्मक स्थानांतरण **(Negative transfer)** का बोध होता है।

पाठगत प्रश्न

1. 'पिन ड्राप साइलेंस', 'चेंज ऑफ हर्ट', 'इच एंड एवरी' जैसे पदों का अस्तित्व कहाँ की अंग्रेजी में है?

   (क) देषज अंग्रेजी　　(ख) भारतीय अंग्रेजी

   (ग) अमेरिकी अंग्रेजी　　(घ) ऑस्ट्रेलियाई अंग्रेजी

2. अंग्रेजी और हिन्दी के वाक्यों में प्रमुख अंतर क्या है?

   ....

   ....

   ....

3. भारतीय अंग्रेजी पर भारतीय समाज और संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है। इस कथन के पक्ष में कुछ शब्दों और वाक्यों को बतौर उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

   ....

   ....

   ....

टिप्पणी

ध्वनि विज्ञान

संसार के बहुत से भागों में बोली जाने वाली अंग्रेजी एक जैसी नहीं सुनाई पड़ती है। ब्रिटिश अंग्रेजी, अमरीकी अंग्रेजी से भिन्न सुनाई पड़ती है। ऑस्ट्रेलियाई अंग्रेजी इन दोनों से भिन्न तथा भारतीय अंग्रेजी इन तीनों से भिन्न सुनाई पड़ती है। यह तथ्य भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी पर भी लागू होता है। उदाहरण के लिए यह बताना बहुत कठिन नहीं होता कि हिन्दी बोलने वाला व्यक्ति बंगाल या बिहार से है या तमिलनाडु से।

ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि विभिन्न प्रांतों के प्रयोक्ताओं द्वारा प्रयुक्त शब्द भंडार और व्याकरण में भिन्नता है बल्कि ऐसा इसलिए है कि वे हमारे कानों को भिन्न प्रतीत होते हैं। इसके कुछ कारण इस प्रकार हैं– पहला कारण यह है कि द्वितीय भाषा में प्रयुक्त होने वाली ध्वनियाँ हमारी प्रथम भाषा में मौजूद नहीं होतीं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी भाषी इन दो शब्दों **'van'** और **'watch'** के प्रथम व्यंजन के उच्चारण के लिए दो भिन्न ध्वनियों का प्रयोग करते हैं किन्तु हिन्दी भाषी इन दोनों शब्दों के लिए **'v'** (व) ध्वनि का प्रयोग करता है।

यही स्थिति अंग्रेजी भाषी के समक्ष हिन्दी सीखते समय उपस्थित होगी। वह खरगोश, घर, छतरी, झरना, थैला, फूल, भालू आदि शब्दों के उच्चारण में कठिनाई का अनुभव करता है और वह इन शब्दों को क्रमशः 'करगोश', 'गर', 'चतरी', 'जरना', 'तेला', 'पूल', 'बालू' बोल सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अंग्रेजी भाषा में 'ख', 'घ', छ, झ, थ, फ, भ आदि ध्वनियाँ उपलब्ध नहीं हैं। यही समान स्थिति ट, ठ ड, ढ ध्वनियों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों के साथ है क्योंकि ये ध्वनियाँ भी अंग्रेजी भाषा में नहीं हैं।

अतः ध्वनि विज्ञान ही ऐसा क्षेत्र है जहाँ हम प्रथम भाषा के हस्तक्षेपों को वास्तव में देख सकते हैं। एक चीज जो भाषा सीखने वाले के ध्वनियों को सीखने की क्षमता को प्रभावित करती है वह है उसकी आयु। जब हमारा मुख का जबड़ा स्थायी हो जाता है तो कुछ ध्वनियों को उच्चरित करने में कठिनाई होती है। नई ध्वनियों को समझने की क्षमता भी एक निश्चित आयु के बाद घटने लगती है। यह पाया गया है कि यौवनारम्भ से पहले तक की आयु (जिसमें कि मस्तिष्क के बाएँ प्रमस्तिष्कीय अर्द्धवृत्त **(Left Hemisphere)** में भाषा स्थापित हो जाती है) में बच्चे ध्वनियों को सीखने में अधिक सफल होते हैं। यहाँ तक कि यदि किसी भारतीय बच्चे को तीन–चार वर्ष की आयु में अंग्रेजी भाषी राष्ट्र जैसे अमेरिका या ब्रिटेन में ले जाया जाय और अंग्रेजी भाषाभाषी बच्चों से वार्तालाप करने की सुविधा प्रदान की जाए तो वह कुछ महीनों के भीतर ही अमरीकी या ब्रिटिश बच्चे की भाँति बोलता हुआ प्रतीत होगा। किन्तु यहाँ यह बताना जरूरी है कि बोलने में मातृभाषा भाषी के समान दक्षता हासिल करने के लिए बच्चे को उन ध्वनियों से सम्पर्क उपलब्ध कराना अनिवार्य है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न

1. एक अंग्रेजी भाशी को 'खरगोष' बोलने में कठिनाई क्यों होती है?

   (क) यह शब्द अंग्रेजी में नहीं है। (ख) 'ख' की ध्वनि अंग्रेजी में नहीं है।

   (ग) हिन्दी बोलना नहीं चाहता है। (घ) सीखने की कोषिष नहीं करता।

2. हमें कुछ ऐसी ध्वनियों को (जो हमारे परिवेष में नहीं हैं) उच्चारित करने में एक खास उम्र के बाद कठिनाई क्यों महसूस होती है?

   ....

   ....

   ....

3. किसी अमरीकी या ब्रिटिश टी.वी. चैनल या रेडियो स्टेशन को सुनिए। क्या उससे सुनायी पड़ने वाली अंग्रेजी भारतीय चैनलों और स्टेशनों पर बोली जाने वाली अंग्रेजी के समान प्रतीत होती है? ठीक यही तुलना भारतीय संदर्भ में बंगाली या पंजाबी चैनल पर बोली जाने वाली हिन्दी में कीजिए। क्या इन सभी चैनलों पर बोली जाने वाली हिन्दी समान प्रतीत होती है?

   ....

   ....

   ....

3.4 भाषा–शिक्षण के तरीके

अगर हम भाषा सिखाने के तरीकों के इतिहास पर एक नजर डालें तो यह ज्ञात होता है कि ये तरीके कई कारकों एवं स्थितियों से प्रभावित एवं निर्धारित होते हैं। जिनमें मुख्य हैं– उस समय के समाज की आवश्यकताएँ, उस वक्त की भाषा और बच्चे के सीखने की प्रक्रिया की समझ, तकनीकी विकास आदि।

3.4.1 व्याकरण अनुवाद विधि (Grammar Translation Method)

भाषा सिखाने का सबसे पुराना तरीका जो आज भी व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाता है वह है– व्याकरण अनुवाद विधि।इसमें भाषा सिखाने का मुख्य उद्देश्य था 'लक्ष्य भाषा' में इस स्तर की प्रवीणता हासिल करना कि 'लक्ष्य भाषा' का साहित्य आसानी से पढ़ा जा सके और लक्ष्य भाषा में लिखना भी आ जाए। विद्यार्थी व्याकरण के नियम और मुख्य शब्दावली याद करते तथा अध्यापक की मदद से आधार भाषा से लक्ष्य भाषा में और लक्ष्य भाषा से

आधार भाषा में अनुवाद करते। भाषा सिखाने के इस तरीके की सबसे बड़ी कमजोरी यह थी कि विद्यार्थी सुनने और बोलने के कौशलों में प्रवीणता हासिल नहीं कर पाते थे।

भाषा सिखाने के इस तरीके के बाद जो तरीके प्रचलन में आए उनमें सुनने और बोलने के कौशलों पर ही अधिक जोर दिया गया। ये तरीके थे– प्रत्यक्ष विधि (**Direct Method**) और श्रवण भाशण विधि (**Audio Lingual Method**)। इन तरीकों का विकास केवल सुनने और बोलने के कौशलों पर जोर देने के लिए या केवल व्याकरण अनुवाद विधि की प्रतिक्रिया में नहीं हुआ था बल्कि उस समय भाषा विज्ञान में यह समझ बन गई थी कि भाषा का मूल रूप मौखिक है और संसार में गिनी–चुनी भाषाएँ ही लिखित रूप में पायी जाती हैं। साथ ही दूसरे विश्व युद्ध में ऐसे अनुवादकों, दुभाषियों और जासूसों की जरूरत पड़ी जो अलग–अलग भाषा बोलने में प्रवीण हों। इसलिए इन तरीकों में सुनना और बोलना सिखाने पर ज्यादा जोर दिया गया।

3.4.2 प्रत्यक्ष विधि (Direct Method)

इसमें बोलने की शुद्धता पर बहुत जोर दिया जाता था। विद्यार्थी अध्यापक के पीछे बार–बार एक ही वाक्य को दोहराते और उसे अध्यापक की तरह ही बोलने की कोशिश करते थे।

3.4.3 श्रवण–भाशण विधि (Audio Lingual Method)

इसमें बोलना सिखाने के लिए संवाद को आधार बनाया गया। इसमें टेपरिकार्डर और भाषा–प्रयोगशाला के आविष्कार से भी बहुत मदद मिली। श्रवण भाशण विधि में इस तरह के संवादों का इस्तेमाल किया जाता था।

जैसे – कमल : आपका नाम क्या है?

गीता : मेरा नाम गीता है और आपका?

कमल : मेरा नाम कमल है। गीता आप कहाँ रहती हैं?

गीता : मैं अशोक विहार में रहती हूँ और आप?

कमल : मैं राजेन्द्र नगर में रहता हूँ।

भाषा सिखाने के आधुनिक तरीकों में संप्रेशणात्मक विधि (**Communicative Method**) और स्वाभाविक तरीके (**Natural Approach**) का ज़िक्र करना ज़रूरी है।

344 संप्रेशणात्मक विधि (Communicative Method)

संप्रेशणात्मक विधि, भाषा विज्ञान में निरन्तर हो रहे शोधों से प्रभावित हुआ। समाजभाषा विज्ञान ने यह स्पष्ट कर दिया कि भाषा को सीखने का मतलब केवल भाषागत संरचना को ही सीखना नहीं है बल्कि संदर्भ के अनुसार उपयुक्त भाषा का प्रयोग सीखना है। स्वाभाविक है कि इस सोच से प्रभावित भाषा सिखाने के तरीकों में सम्प्रेषण का सम्पूर्ण संदर्भ आधार

बना। इस तरह के सिखाने के तरीके में पाठ कुछ ऐसे होते थे– रेलवे स्टेशन पर, डॉक्टर के यहाँ, नौकरी के लिए साक्षात्कार आदि।

3.4.5 स्वाभाविक तरीका (Natural Approach)

इसमें सबसे अधिक ध्यान इस बात पर दिया गया कि भाषा सीखने के केन्द्र में अध्यापक या पठन सामग्री नहीं होनी चाहिए बल्कि विद्यार्थी होना चाहिए। यह बात भी भाषा विज्ञान में हो रहे शोधों से प्रभावित थी। इस तरह के शोधों से यह भी स्पष्ट हुआ कि गलतियाँ करना भाषा सीखने की राह में आवश्यक पड़ाव हैं तथा गलतियों के विश्लेषण से यह भी जाहिर हुआ कि वे ज्ञान की और सीखने की प्रक्रिया की द्योतक हैं।

इन शोधों ने यह भी सिद्ध करने की कोशिश की कि बच्चे में जन्म से ही भाषा सीखने की अपार क्षमता होती है। स्कूल में आने से पहले ही चार वर्ष की बालिका अपनी भाषा के व्याकरण को पूरी तरह से आत्मसात कर लेती है और उसके समझने और बोलने में कोई त्रुटि नहीं करती। इसलिए स्वाभाविक तरीके में इस बात पर जोर दिया गया कि बच्चों के भाषा सीखने का माहौल चिंतामुक्त हो, पठन–सामग्री उनके स्तर की तथा उनके लिए रोचक और चुनौतीपूर्ण हो।

पाठगत प्रश्न

1. प्रत्यक्ष विधि में किस च़ीज पर जोर रहता है?

   (क) संवाद पर   (ख) संदर्भानुसार उपयुक्त भाशा प्रयोग पर

   (ग) विद्यार्थी पर   (घ) बोलने की शुद्धता पर

2. भाषा–शिक्षण का सबसे पुराना तरीका कौनसा है? इसकी क्या सीमाएँ हैं?

   ....

   ....

   ....

3. वर्त्तमान समय में भाषा सिखाने का कौनसा तरीका ज्यादा प्रासंगिक है और क्यों?

   ....

   ....

   ....

4. श्रवण–भाशण विधि के माध्यम से भाषा सिखाने के लिए एक रोचक संवाद की रचना कीजिए।

   ....

   ....

   ....

टिप्पणी

3.5 सारांश

- बच्चे प्रथम भाषा अपने घरेलू परिवेश से बिना किसी औपचारिक शिक्षण के यानी बिना स्कूल गये और बिना किताब पढ़े सीख जाते हैं।
- हर सामान्य बच्चे में भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। वे विभिन्न भाषाओं के सम्पर्क में एक से अधिक भाषाएँ भी पूरी दक्षता के साथ सीख जाते हैं। अतः बच्चे बड़ों के अनुकरण से भाषाएँ नहीं सीखते हैं।
- स्वाभाविक रूप से भाषा सीखने की एक निश्चित आयु 2 से 14 साल तक होती है। जिसे 'क्रिटिकल पीरियड' कहा जाता है। इस आयु के बीत जाने पर भाषा स्वाभाविक रूप से तथा उस भाषा के **Native Speaker** की तरह नहीं सीखी जा सकती।
- मस्तिष्क के बाएँ भाग में स्थित वर्निकेज क्षेत्र और ब्रोकाज क्षेत्र भाषा संबंधी गतिविधियों के लिए जिम्मेदार हैं। ये क्रमशः भाषा को समझने और बोलने के लिए उत्तरदायी हैं। मस्तिष्क के इस हिस्से में चोट लगने से भाषा प्रभावित होती है।
- बच्चे भाषा सीखने के दौरान उम्र के अनुसार विभिन्न अवस्थाओं से होकर गुजरते हैं। जैसे– कूइंग, बैब्लिंग, एक शब्द की अवस्था, दो शब्द की अवस्था आदि।
- द्वितीय भाषा सीखने के लिए औपचारिक शिक्षण की जरूरत होती है। लेकिन उसे प्रथम भाषा की तरह भी सीखा जा सकता है यदि क्रिटिकल पीरियड के दौरान बच्चे को उस भाषा का उपयुक्त सान्निध्य मिले तथा उसके आसपास के परिवेश में उसका पर्याप्त प्रयोग हो।
- द्वितीय भाषा को सीखने में बोधगम्य सामग्री एवं उपयुक्त, स्वाभाविक तथा सम्प्रेषणपरक भाषिक माहौल की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।
- द्वितीय भाषा शिक्षण के लिए परम्परागत विधि के विपरीत अर्थ से संरचना की ओर अग्रसर होना चाहिए।
- द्वितीय भाषा में शुद्धता और धारा प्रवाहिता समय के साथ विकसित होती है।
- विद्यार्थी की प्रेरणा, आत्मविश्वास, उत्सुकता एवं भाषा सीखने के प्रति उसका रवैया द्वितीय भाषा सीखने में अहम भूमिका निभाते हैं।
- द्वितीय भाषा को सीखने में हमारी प्रथम भाषा बाधा उत्पन्न नहीं करती है।

3.6 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

Aitchison, J. (1979). *The Articulate Mammal: An Introduction to Psycholinguistics*. London: Hutchinson & Co.

Aitchison, J. (2003). *Teach Yourself Linguistics*. London: Hodder & Stoughton Ltd.

टिप्पणी

Agnihotri, R. K. (2007). Towards a Pedagogical Paradigm Rooted in Multilinguality. *International Multilingual Research Journal*, Vol.(2), 1-10

Agnihotri, R.K. & Khanna, A.L (1994). *Second Language Acquisition*. New Delhi: Sage Publications.

Cook, V. (2008). *Second Language Learning and Language Teaching*. London: Hodder Education.

Krashen, S. (1982). *Principles and Practice in Second Language Acquistion*. Pergamon Press Inc.

McGregor, W. (2009). *Linguistics: An Introduction.* London: Continuum International Publishing Group.

Yule, G. (2006). *The Study of Langauge*. New Delhi: Cambridge University Press.

3.7 अंत्य इकाई अभ्यास

1. भाषा अर्जन और भाषा अधिगम में क्या अंतर है तथा इनमें कौनसी चीज़ें सामान्य हैं?
2. प्रथम भाषा–अर्जन में भाषा समृद्ध घरेलू वातावरण की भूमिका पर विचार कीजिए।
3. मानव शरीर की जैविक अनुकूलता भाषा सीखने में कैसे मदद करती है?
4. एक संवादात्मक उदाहरण द्वारा सिद्ध कीजिए कि बच्चे, बड़ों का अनुकरण करके भाषा नहीं सीखते हैं।
5. भाषा सीखने में 'क्रिटिकल पीरियड' का क्या महत्व है?
6. टेलिग्राफिक स्पीच और हालोफ्रेस्टिक स्पीच में क्या अंतर है?
7. यदि बच्चों को अनुकूल भाषाई माहौल उपलब्ध कराया जाय तो क्या वे प्रथम भाषा की ही तरह द्वितीय भाषा भी स्वाभाविक रूप से सीख सकते हैं? यदि हाँ तो कैसे?
8. द्वितीय भाषा सीखने के विभिन्न तरीकों एवं आवश्यक साधनों पर चर्चा कीजिए।
9. क्या आप इस बात से सहमत हैं कि द्वितीय भाषा सीखने में हमारी प्रथम भाषा बाधा नहीं उत्पन्न करती है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
10. मस्तिष्क का कौनसा भाग भाषा के लिए जिम्मेदार है? ब्रोकाज और वर्निकेज क्षेत्र का क्या प्रकार्य **(Function)** है?
11. भाषा शिक्षण के तरीकों पर संक्षेप में चर्चा करते हुए उनकी शक्तियों और सीमाओं को रेखांकित कीजिए।

टिप्पणी

प्रदत्त कार्य (Assignment)

- अपने आसपास के 6 सप्ताह से डेढ़ साल तक के बच्चों की भाषा का अवलोकन कीजिए और उनके द्वारा बोले जाने वाले शब्दों की सूची बनाइए। क्या इस सूची से यह बात सिद्ध होती है कि बच्चे भाषा सीखने के दौरान विभिन्न अवस्थाओं से होकर गुजरते हैं।